بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

चौदहवां पारा

बाब 3 : ग़ार वालों का क़िस्सा

٥٣- بَابُ حَدِيْثُ الْغَارِ

तश्रीह : पारा नम्बर 13 के ख़ात्मे पर अस्हाबे कहफ़ का वाक़िया बयान किया गया। इसलिये मुनासिब हुआ कि पारा नम्बर 14 को ग़ार वालों के ज़िक्र से शुरू किया जाए। कुछ उलमा ने आयते शरीफ़ा, **अम हसिब्त अन्न अस्हाबल्कहफ़ि वर्रक़ीमि कानू** (अल कहफ़ : 9) में रक़ीम वालों से ये लोग जिनका बयान इस ह़दीष़ में है ये मुराद लिये, वाक़िया बहुत ही अजीब है मगर **इन्नल्लाहा अला कुल्लि शैइन क़दीर** के तह़त क़ुदरते इलाही से कुछ दूर भी नहीं है। मज़ीद तफ़्सील आगे आ रही है। ह़ाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **अकिबल्मुसन्निफ़ किस़्स़त अस्हाबल्कहफ़ि बिह़दीष़िल्गारि इशारतन इला मा वरद अन्नहू क़द क़ील अन्नर्रक़ीमल्मज़्कूर फी कौलिही तआला अम हसब्ति अन्न अस्हाबल्कहफि वर्रक़ीमि हुवल्गारुल्लज़ी असाब फीहिष़्ष़लाष़तु मा अस़ाबहुम व ज़ालिक फीम अख़्रजहुल्बज़्ज़ार वत्तबरानी बिइस्नादिन हसनिन अनिन्नुअमानि बिन बशीर अन्नहू मअन्नबिय्यि (ﷺ) यज़्कुरुर्रक़ीम काल इन्तलक़ ष़लाषतुन फकानु फी कहफिन फवक़अल्जबलु अला बाबिल्कहफि फऔस़द अलैहिम फज़करल्हदीष़** (फ़तहुल्बारी) या'नी ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने अस्ह़ाबे कहफ़ के बयान के बाद ह़दीषे ग़ार का ज़िक्र किया जिसमें आपने इशारा फ़र्माया कि आयते करीमा, **अम् ह़सिब्त अन्ना अस्हाबल कहफ़ि वर्रक़ीम** में रक़ीम वालों से वो ग़ार वाले मुराद हैं जो तीन थे और अचानक वो पहाड़ की चट्टान गिरने से उस मुसीबत में फंस गये थे जैसा कि बज़्ज़ार व तबरानी ने सनदे ह़सन के साथ नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत की है कि उन्होंने सुना रसूलुल्लाह (ﷺ) से आप रक़ीम वालों का ज़िक्र फ़र्मा रहे थे कि तीन साथी चले जा रहे थे। उन्होंने जब एक ग़ार में पनाह ली तो उन पर पहाड़ की एक चट्टान गिरी और उनको वहाँ बन्द होना पड़ा। फिर अल्लाह ने उनकी दुआओं को क़ुबूल किया और वहाँ से उनको नजात बख़्शी।

3465. हमसे इस्माईल बिन ख़लील ने बयान किया, कहा हमको अली बिन मिस्हर ने ख़बर दी, उन्हें उबैदुल्लाह बिन उमर ने, उन्हें नाफ़ेअ ने और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, पिछले ज़माने में (बनी इस्राईल में से) तीन आदमी कहीं रास्ते में जा रहे थे कि अचानक बारिश ने उन्हें आ लिया। वो तीनों पहाड़ के एक कोह (ग़ार) में घुस गये (जब वो अंदर चले गये) तो ग़ार का मुँह बन्द हो गया। अब तीनों आपस में यूँ कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हमें इस मुसीबत से अब तो सिर्फ़ सच्चाई ही नजात दिलाएगी। बेहतर ये है कि अब हर शख़्स अपने किसी ऐसे अमल को बयान करके दुआ करे

٣٤٦٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ خَلِيْلٍ أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : ((بَيْنَمَا ثَلاَثَةُ نَفَرٍ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ يَمْشُوْنَ إِذْ أَصَابَهُمْ مَطَرٌ، فَأَوَوْا إِلَى غَارٍ فَانْطَبَقَ عَلَيْهِمْ، فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ : إِنَّهُ وَاللهِ يَا هَؤُلاَءِ لاَ يُنْجِيْكُمْ إِلاَّ

الصِّدْقَ، فَلْيَدْعُ كُلُّ رَجُلٍ مِنْكُمْ بِمَا يَعْلَمُ أَنَّهُ قَدْ صَدَقَ فِيْهِ. فَقَالَ وَاحِدٌ مِنْهُمْ: اللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ كَانَ لِي أَجِيْرٌ عَمِلَ لِي عَلَى فَرَقٍ مِنْ أُرُزٍّ، فَذَهَبَ وَتَرَكَهُ، وَأَنِّي عَمَدْتُ إِلَى ذَلِكَ الْفَرَقِ فَزَرَعْتُهُ، فَصَارَ مِنْ أَمْرِهِ أَنِّي اشْتَرَيْتُ مِنْهُ بَقَرًا، وَأَنَّهُ أَتَانِي يَطْلُبُ أَجْرَهُ، فَقُلْتُ لَهُ: اعْمِدْ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ فَسُقْهَا، فَقَالَ لِيْ: إِنَّمَا لِيْ عِنْدَكَ فَرَقٌ مِنْ أُرُزٍّ. فَقُلْتُ لَهُ: اعْمَدْ إِلَى تِلْكَ الْبَقَرِ، فَإِنَّهَا مِنْ ذَلِكَ الْفِرَقِ. فَسَاقَهَا. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا. فَانْسَاخَتْ عَنْهُمُ الصَّخْرَةُ. فَقَالَ الآخَرُ: اللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ كَانَ لِي أَبَوَانِ شَيْخَانِ كَبِيْرَانِ، فَكُنْتُ آتِيْهِمَا كُلَّ لَيْلَةٍ بِلَبَنِ غَنَمٍ لِي، فَأَبْطَأْتُ عَلَيْهِمَا لَيْلَةً، فَجِئْتُ وَقَدْ رَقَدَا؛ وَأَهْلِي وَعِيَالِي يَتَضَاغَوْنَ مِنَ الْجُوعِ، فَكُنْتُ لاَ أَسْقِيْهِمْ حَتَّى يَشْرَبَ أَبَوَايَ، فَكَرِهْتُ أَنْ أُوْقِظَهُمَا، وَكَرِهْتُ أَنْ أَدَعَهُمَا فَيَسْتَكِنَّا لِشَرْبَتِهِمَا، فَلَمْ أَزَلْ أَنْتَظِرُ حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَن فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا. فَانْسَاخَتْ عَنْهُمُ الصَّخْرَةُ حَتَّى نَظَرُوا إِلَى السَّمَاءِ. فَقَالَ الآخَرُ: اللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ كَانَ لِي ابْنَةُ عَمٍّ مِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَأَنِّي رَاوَدْتُهَا عَنْ نَفْسِهَا فَأَبَتْ إِلاَّ أَنْ آتِيَهَا

जिसके बारे में उसे यक़ीन हो कि वो ख़ालिस अल्लाह तआला की रज़ामन्दी के लिये किया था। चुनाँचे एक ने इस तरह दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझको ख़ूब मा'लूम है कि मैंने एक मज़दूर रखा था जिसने एक फ़रक़ (तीन साअ) चावल की मज़दूरी पर मेरा काम किया था लेकिन वो शख़्स (गुस्से में आकर) चला गया और अपने चावल छोड़ गया। फिर मैंने उस एक फ़रक़ चावल को लिया और उसकी काश्त की। उससे इतना कुछ हो गया कि मैंने पैदावार में से गाय—बैल ख़रीद लिये। उसके बहुत दिन बाद वही शख़्स मुझसे अपनी मज़दूरी मांगने आया। मैंने कहा कि ये गाय—बैल खड़े हैं, उनको ले जा। उसने कहा कि मेरा तो सिर्फ़ एक फ़रक़ चावल तुम पर होना चाहिये था। मैंने उससे कहा कि ये सब गाय—बैल ले जा क्योंकि उसी एक फ़रक़ की आमदनी है। आख़िर वो गाय—बैल लेकर चला गया। पस ऐ अल्लाह! अगर तू जानता है कि ये ईमानदारी मैंने सिर्फ़ तेरे डर से की थी तो तू ग़ार का मुँह खोल दे। चुनाँचे उसी वक़्त वो पत्थर कुछ हट गया। फिर दूसर ने इस तरह दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझे ख़ूब मा'लूम है कि मेरे माँ—बाप जब बूढ़े हो गये तो मैं उनकी ख़िदमत में रोज़ाना रात में अपनी बकरियों का दूध लाकर पिलाया करता था। एक दिन इत्तिफ़ाक़ से मैं देर से आया तो वो सो चुके थे। इधर मेरे बीवी और बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे लेकिन मेरी आदत थी कि जब तक वालिदैन को दूध न पिला लूँ, बीवी—बच्चों को नहीं देता था। मुझे उन्हें बेदार करना भी पसन्द नहीं था और छोड़ना भी पसन्द न था (क्योंकि यही उनका शाम का खाना था और उसके न पीने की वजह से वो कमज़ोर हो जाते) पस मैं उनका वहीं इंतिज़ार करता रहा यहाँ तक कि सुबह हो गई। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये काम तेरे डर की वजह से किया था तो तू हमारी मुश्किल दूर कर दे। उस वक़्त वो पत्थर कुछ और हट गया और अब आसमान नज़र आने लगा। फिर तीसरे शख़्स ने यूँ दुआ की, ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब थी। मैंने एक बार उससे सुहबत करनी चाही, उसने इंकार किया मगर उस शर्त पर तैयार हुई कि मैं उसे सौ अशरफ़ी लाकर दे दूँ। मैंने ये रक़म हासिल करने के लिये

بِمِائَةِ دِينَارٍ، فَطَلَبْتُهَا حَتَّى قَدَرْتُ، فَأَتَيْتُهَا بِهَا فَدَفَعْتُهَا إِلَيْهَا، فَأَمْكَنَتْنِي مِنْ نَفْسِهَا، فَلَمَّا قَعَدْتُ بَيْنَ رِجْلَيْهَا فَقَالَتِ اتَّقِ اللهَ وَلاَ تَفُضَّ الْخَاتَمَ إِلاَّ بِحَقِّهِ. فَقُمْتُ وَتَرَكْتُ الْمِائَةَ دِينَارٍ. فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنِّي فَعَلْتُ ذَلِكَ مِنْ خَشْيَتِكَ فَفَرِّجْ عَنَّا، فَفَرَّجَ اللهُ عَنْهُمْ فَخَرَجُوا)).

[راجع: ٢٢١٥]

कोशिश की। आख़िर वो मुझे मिल गई तो मैं उसके पास आया और वो रक़म उसके ह़वाले कर दी। उसने मुझे अपने नफ़्स पर क़ुदरत दे दी। जब मैं उसके ऐन क़रीब बैठ चुका तो उसने कहा कि अल्लाह से डर और मुहर को बग़ैर ह़क़ के न तोड़। मैं (ये सुनते ही) खड़ा हो गया और सौ अशरफ़ी भी वापस नहीं ली। पस अगर तेरे इल्म में भी मैंने ये अ़मल तेरे डर की वजह से किया था तो तू हमारी मुश्किल आसान कर दे। अल्लाह तआ़ला ने उनकी मुश्किल दूर कर दी और वो तीनों बाहर निकल आए।

(राजेअ़ : 2215)

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ के ज़ेल में ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह) फ़र्माते हैं, **व फीहि फ़ज़्लुल्इख़्लासि फ़िल्अ़मलि व फ़ज़्लु बिर्रिल्वालिदैनि व ख़िदमतिहा व ईष़ारिहिमा अलल्वलदि व तहम्मुलल्मशक़्क़ति लिअजलिहिमा व क़द इस्तश्कल तर्कुहू औलादहुस्सिगार यब्कून मिनल्जूइ तूल लैलतिहिमा मअ़ क़ुदरतिही अ़ला तस्कीनि जूइहिम फक़ील कान शर्उहुम तक़्दीमु नफ़्क़तिन गैरहुम व क़ील यहतमिलु अन्न बुकाअहुम लैस अनिल्जुइ क़द तक़द्दम मा यरूद्दुहू व क़ील लअ़ल्लहुम कानू यत्लुबून ज़ियादत अ़ला सद्दिर्रमक़ि व हाज़ा औला व फीहि व फ़ज़्लुल्इफ़्फ़ति वल्इनकाफ़ि अनिल्हरामि मअ़ल्कुदरति व अन्न तर्कल्मअ़सियति यम्हू मुक़द्दमाति त़लबिहा व अन्नत्तौबत तजिबु मा क़ब्लहा व फीहि जवाज़ुल्इजाज़ति बित्तआ़मिल्मअ़लूमि बैनल्मुताजिरीन व फ़ज़्लु अदाइल्अमानति व इष़्बातिल्करामति लिस्सालिहीन** (फ़त्हुल्बारी) या'नी इस ह़दीष़ से अ़मल में इख़्लास़ की फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई और माँ–बाप के साथ नेक सुलूक़ की और ये कि माँ–बाप की रज़ाजूई के लिये हर मुम्किन मशक़्क़त को बर्दाश्त करना औलाद का फ़र्ज़ है। उस शख़्स़ ने अपने बच्चों को रोने दिया और उनको दूध नहीं पिलाया, उसकी कई वुजूहात बयान की गई हैं। कहा गया है कि उनकी शरीअ़त का हुक्म ही ये था कि ख़र्च में माँ–बाप को दूसरों पर मुक़द्दम रखा जाए। ये भी अन्देशा है कि उन बच्चों को दूध थोड़ा ही पिलाया गया इसलिये वो रोते रहे, और इस ह़दीष़ से पाकबाज़ी की भी फ़ज़ीलत ष़ाबित हो गई और ये भी मा'लूम हुआ कि तौबा करने से पहली ग़ल्तियाँ भी मुआफ़ हो जाती हैं और उससे ये भी जवाज़ निकला कि मज़दूर को त़आम की उजरत पर भी मज़दूर रखा जा सकता है और अमानत की अदायगी की भी फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई और स़ालिह़ीन की करामतों का भी इष़्बात हुआ कि अल्लाह पाक ने उन स़ालेह़ बन्दों की दुआओं के नतीज़े में उस पत्थर को चट्टान के मुँह से हटा दिया और ये लोग वहाँ से नजात पा गये। रह़िमहुमुल्लाह अज्मईन। नीज़ ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रह) फ़र्माते हैं कि इमाम बुख़ारी (रह) ने वाक़िया अस्ह़ाबे कहफ़ के बाद ह़दीषे ग़ार का ज़िक्र फ़र्माया जिसमें इशारा है कि आयते क़ुर्आनी **अम् ह़सिब्त अन्ना अस़्ह़ाबल कहफ़ि वर्रक़ीम** (अल कहफ़ : 9) में रक़ीम से यही ग़ार वाले मुराद हैं जैसा कि त़बरानी और बज़्ज़ार ने सनदे ह़सन के साथ नोअ़मान बिन बशीर (रज़ि.) से रिवायत किया है कि उन्होंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना। रक़ीम का बयान फ़र्माते हुए आपने उन तीनों शख़्सों का ज़िक्र फ़र्माया जो एक ग़ार में पनाह गुज़ीं हो गये थे और जिन पर पत्थर की चट्टान गिर गई थी और उसने ग़ार का मुँह बन्द कर दिया था। तीनों में मज़दूरी पर ज़राअ़त का काम कराने वाले का ज़िक्र है। इमाम अह़मद की रिवायत में उसका क़िस़्सा यूँ मज़्कूर है कि मैंने कई मज़दूर उनकी मज़दूरी ठहराकर काम पर लगाए। एक शख़्स़ दोपहर को आया मैंने उसको आधी मज़दूरी पर रखा लेकिन उसने इतना काम किया जितना औरों ने सारे दिन में किया था। मैंने कहा कि मैं उसको भी सारे दिन की मज़दूरी दूँगा। इस पर पहले मज़दूरों में से एक शख़्स़ गुस़्से में हुआ। मैंने कहा भाई! तुझे क्या मतलब है, तू अपनी मज़दूरी पूरी ले ले। उसने गुस़्से में अपनी मज़दूरी भी नहीं ली और चल दिया। फिर आगे वो हुआ जो रिवायत में मज़्कूर है। क़स्त़लानी (रह) ने कहा कि उन तीनों में अफ़ज़ल तीसरा शख़्स़ था। इमाम ग़ज़ाली (रह) ने कहा शह्वत आदमी पर बहुत ग़लबा करती है और जो शख़्स़ सब सामान होते हुए महज़ अल्लाह के डर से बदकारी से बाज़ रह गया उसका दर्जा स़िद्दीक़ीन

कि वहाँ ताऊन है, वापस लौट आए। लोगों ने कहा आप अल्लाह की तक़्दीर से भागते हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हम अल्लाह की तक़्दीर से अल्लाह की तक़्दीर ही की तरफ़ भागते रहे हैं। ताऊन में पहले शदीद बुख़ार होता है फिर बग़ल या गर्दन में गिल्टी निकलती है और आदमी मर जाता है। ताऊन की मौत शहादत है।

3474. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे दाऊद बिन अबी फ़ुरात ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन यअ़मर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) से ताऊन के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि ये एक अ़ज़ाब है, अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहता है भेजता है लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसको मोमिनों के लिये रहमत बना दिया है। अगर किसी शख़्स की बस्ती में ताऊन फैल जाए और वो सब्र के साथ अल्लाह की रहमत से उम्मीद लगाए हुए वहीं ठहरा रहे कि होगा वही जो अल्लाह तआ़ला ने क़िस्मत में लिखा है तो उसे शहीद के बराबर ष़वाब मिलेगा।

(दीगर मक़ाम : 5734, 6619)

٣٤٧٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ : ((سَأَلْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ، فَأَخْبَرَنِي أَنَّهُ عَذَابٌ يَبْعَثُهُ اللهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ، وَأَنَّ اللهَ جَعَلَهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، لَيْسَ مِنْ أَحَدٍ يَقَعُ الطَّاعُونُ فَيَمْكُثُ فِي بَلَدِهِ صَابِرًا مُحْتَسِبًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لاَ يُصِيْبُهُ إِلاَّ مَا كَتَبَ اللهُ لَهُ إِلاَّ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ شَهِيْدٍ)). [طرفاه في : ٥٧٣٤، ٦٦١٩].

3475. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि मख़्ज़ूमिया ख़ातून (फ़ातिमा बिन्ते अस्वद) जिसने (ग़ज़्व-ए-फ़तह के मौक़े पर) चोरी कर ली थी, उसके मामले ने क़ुरैश को फ़िक्र में डाल दिया। उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि उस मामला पर आँहज़रत (ﷺ) से बातचीत कौन करे? आख़िर ये तै पाया कि उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) आपको बहुत अ़ज़ीज़ हैं। उनके सिवा और कोई उसकी हिम्मत नहीं कर सकता। चुनाँचे उसामा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से इस बारे में कुछ कहा तो आपने फ़र्माया। ऐ उसामा! क्या तू अल्लाह की हुदूद में से एक हद के बारे में मुझसे सिफ़ारिश करता है? फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया (जिसमें) आपने फ़र्माया। पिछली बहुत सी उम्मतें इसलिये हलाक हो गईं कि जब उनका कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते और अल्लाह की क़सम! अगर

٣٤٧٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا لَيْثٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا، أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّهُمْ شَأْنُ الْمَرْأَةِ الْمَخْزُومِيَّةِ الَّتِي سَرَقَتْ، فَقَالُوا: وَمَنْ يُكَلِّمُ فِيْهَا رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ فَقَالُوا : وَمَنْ يَجْتَرِئُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَهُ أُسَامَةُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَاخْتَطَبَ، ثُمَّ قَالَ : ((إِنَّمَا أَهْلَكَ الَّذِيْنَ قَبْلَكُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيْهِمُ الشَّرِيْفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ فِيْهِمُ الضَّعِيْفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ. وَايْمُ اللهِ! لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ ابْنَتِ

مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعْتُ يَدَهَا)).
[راجع: ٢٦٤٨]

फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (ﷺ) भी चोरी करे तो मैं उसका भी हाथ काट डालूँ। (राजेअ : 2638)

इस ह़दीष़ की शरह़ किताबुल हुदूद में आएगी। चोर का हाथ काट डालना शरीअ़ते मूसवी में भी था। जो कोई उस सज़ा को वह़शियाना बताए वो ख़ुद वह़शी है और जो कोई मुसलमान होकर उस सज़ा को ख़िलाफ़े तहज़ीब कहे वो काफ़िर और इस्लाम के दायरे से ख़ारिज है। (वह़ीदी) ह़ज़रत उसामा रसूलुल्लाह (ﷺ) के बड़े ही चहेते बच्चे थे क्योंकि उनके वालिद ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़ारिष़ा की परवरिश रसूलुल्लाह (ﷺ) ने की थी। यहाँ तक कि कुछ लोग उनको रसूले करीम (ﷺ) का बेटा समझते और उसी त़रह़ पुकारते मगर आयते करीमा **उदऊ़हुम लिआबाइहिम** (अल अह़ज़ाब : 5) ने उनको इस त़रह़ पुकारने से मना कर दिया।

٣٤٧٦- حَدَّثَنَا آدَمُ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَيْسَرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّزَّالَ بْنَ سَبْرَةَ الْهِلاَلِيَّ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَجُلاً قَرَأَ آيَةً وَسَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ خِلاَفَهَا، فَجِئْتُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ فَأَخْبَرْتُهُ، فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ الْكَرَاهِيَةَ وَقَالَ: كِلاَكُمَا مُحْسِنٌ، وَلاَ تَخْتَلِفُوا، فَإِنَّ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمُ اخْتَلَفُوا فَهَلَكُوا)).
[راجع: ٢٤١٠]

3476. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन मैसरह ने बयान किया, कहा कि मैंने नज़्ज़ाल बिन सब्रह हिलाली से सुना और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने एक सह़ाबी (अ़म्र बिन आ़स) को क़ुर्आन मजीद की एक आयत पढ़ते सुना। वही आयत नबी अकरम (ﷺ) से उसके ख़िलाफ़ क़िरात के साथ में सुन चुका था, इसलिये मैं उन्हें साथ लेकर आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आपसे ये वाक़िया बयान किया लेकिन मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के चेहर-ए-मुबारक पर उसकी वजह से नाराज़ी के आष़ार देखे। आपने फ़र्माया तुम दोनों अच्छा पढ़ते हो। आपस में इख़्तिलाफ़ न किया करो। तुमसे पहले लोग इसी क़िस्म के झगड़ों से तबाह हो गये। (राजेअ : 2410)

तश्रीह : या'नी क़ुर्आन मजीद में जो इख़्तिलाफ़े क़िरात है, उसमें हर आदमी को इख़्तियार है जो किरात चाहे वो पढ़े। इस अम्र में लड़ना झगड़ना मना है। ऐसे ही फ़ुरूई और क़यासी मसाइल में लड़ना झगड़ना मना है और ख़ामख़्वाह किसी को क़यासी मसाइल के लिये मजबूर करना कि वो सिर्फ़ ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह) या सिर्फ़ ह़ज़रत इमाम शाफ़िई (रह) के इज्तिहाद पर चले ये नाह़क़ का तह़ाकुम और जबर और ज़ुल्म है।

٣٤٧٧- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنِي شَقِيقٌ قَالَ عَبْدُ اللهِ : كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِي نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ ضَرَبَهُ قَوْمُهُ فَأَدْمَوهُ، وَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لاَ يَعْلَمُونَ)). [طرفه في : ٦٩٢٩].

3477. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे बाप ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा मैं गोया नबी करीम (ﷺ) को इस वक़्त देख रहा हूँ। आप बनी इस्राईल के एक नबी का वाक़िया बयान कर रहे थे कि उनकी क़ौम ने उन्हें मारा और ख़ून आलूद कर दिया। लेकिन वो नबी ख़ून स़ाफ़ करते जाते और ये दुआ़ करते कि, ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम की मग़्फ़िरत फ़र्मा। ये लोग जानते नहीं हैं। (दीगर मक़ाम : 6929)

तश्रीह : कहते हैं कि ये ह़ज़रत नूह़ (अलैहिस्सलाम) का वाक़िया है मगर उस सूरत में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) इस ह़दीष़

दादों की त़रफ़ अपनी निस्बत करना

الإِسْلاَمِ وَالْجَاهِلِيَّةِ

या'नी ये बयान करना कि मैं फ़लाँ की औलाद में से हूँ अगरचे वो आबा व अज्दाद ग़ैर–मुस्लिम ही क्यूँ न हों मगर ऐसा बयान करना जाइज़ है। ये इस्लाम की वो ज़बरदस्त अख़्लाक़ी ता'लीम है जिस पर मुसलमान फ़ख़्र कर सकते हैं। हिन्दुस्तान की बेशतर क़ौमें नव-मुस्लिम हैं। वो भी अपने ग़ैर–मुस्लिम आबाअ व अज्दाद का ज़िक्र करें तो शरअ़न उसमें कोई क़बाहत नहीं है बशर्ते कि ये ज़िक्र हुदूदे शरई के अंदर हो।

और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि करीम बिन करीम बिन करीम बिन करीम यूसुफ़ बिन यअ़क़ूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अ़लैहिस्सलाम) थे। और बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं अ़ब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ ابْنُ عُمَرَ وَأَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّ الْكَرِيْمَ ابْنَ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ ابْنِ الْكَرِيْمِ يُوسُفُ بْنُ يَعْقُوبَ بْنِ إِسْحَاقَ بْنِ إِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِ اللهِ)). وَقَالَ الْبَرَاءُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ)).

आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने आपको अ़ब्दुल मुत्तलिब की त़रफ़ मन्सूब किया इससे बाब का मत़लब षाबित हुआ।

3525. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, कहा उनसे अ़म्र बिन मुर्रह ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब (सूरह शुअ़रा की) ये आयत उतरी, ऐ पैग़म्बर! अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराओ तो नबी (ﷺ) ने क़ुरैश के क़रीबी रिश्तेदारों को डराया, तो नबी (ﷺ) ने क़ुरैश के मुख़्तलिफ़ क़बीलों को बुलाया, ऐ बनी फ़हर! ऐ बनी अ़दी! जो क़ुरैश के ख़ानदान थे। (राजेअ़ : 1394)

٣٥٢٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرِ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ [الشعراء: ٢١٤] جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يُنَادِي: ((يَا بَنِي فِهْرٍ، يَا بَنِي عَدِيٍّ))، بِبُطُونِ قُرَيْش)).

[راجع: ١٣٩٤]

3526. (ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने) कहा कि हमसे क़बीस़ा ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें ह़बीब बिन अबी षाबित ने, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत और आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डराइये, उतरी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने अलग अलग क़बीलों को (दीने इस्लाम की) दा'वत दी। (राजेअ़ : 1394)

٣٥٢٦- وَقَالَ لَنَا قَبِيْصَةُ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ حَبِيْبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ عَنْ سَعِيْدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((لَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الأَقْرَبِيْنَ﴾ جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُوهُمْ قَبَائِلَ قَبَائِلَ)).

[راجع: ١٣٩٤]

3527. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमको अबुज़्ज़िनाद ने ख़बर दी, उन्हें

٣٥٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ أَخْبَرَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي

अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अ़ब्दे मुनाफ़ के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह से ख़रीद लो (या'नी नेक काम करके उन्हें अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से बचा लो) ऐ अ़ब्दुल मुत्तलिब के बेटों! अपनी जानों को अल्लाह तआ़ला से ख़रीद लो। ऐ ज़ुबैर बिन अ़व्वाम की वालिदा! रसूलुल्लाह (ﷺ) की फूफी, ऐ फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद! तुम दोनों अपनी जानों को अल्लाह से बचा लो। मैं तुम्हारे लिये अल्लाह की बारगाह में कुछ इख़्तियार नहीं रखता। तुम दोनों मेरे माल में जितना चाहो मांग सकती हो। (राजेअ़ : 2753)

هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللهِ. يَا بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ، اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ مِنَ اللهِ. يَا أُمَّ الزُّبَيْرِ بْنِ الْعَوَّامِ عَمَّةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ، يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ، اشْتَرِيَا أَنْفُسَكُمَا مِنَ اللهِ، لاَ أَمْلِكُ لَكُمَا مِنَ اللهِ شَيْئًا سَلاَنِي مِنْ مَالِي مَا شِئْتُمَا)). [راجع: ٢٧٥٣]

तश्रीह : बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन ख़ानदानों को उनके पुराने आबा व अज्दाद ही के नामों से पुकारा, मा'लूम हुआ कि ऐसी निस्बत अल्लाह के नज़दीक मअ़यूब (बुरी) नहीं है जैसे यहाँ के बेशतर मुसलमान अपने पुराने ख़ानदानों ही के नाम से अपनी पहचान कराते हैं। दूसरी रिवायत में यूँ है ऐ आइशा! ऐ हफ़्सा! ऐ उम्मे सलमा! ऐ बनी हाशिम! अपनी अपनी जानों को दोज़ख़ से छुड़ाओ। मा'लूम हुआ कि अगर ईमान न हो तो पैग़म्बर (अ़लैहिस्सलाम) की रिश्तेदारी क़यामत में कुछ काम न आएगी। इस हदीष़ से इस शिर्किया शिफ़ाअ़त का बिलकुल रद्द हो गया जो कुछ नाम के मुसलमान अंबिया और औलिया की निस्बत ये ए'तिक़ाद रखते हैं कि जिसके दामन को चाहेंगे पकड़कर अपनी शिफ़ाअ़त कराके बख़्शवा लेंगे, ये अ़क़ीदा सरासर बातिल है।

बाब 14 : किसी क़ौम का भांजा या आज़ाद किया हुआ गुलाम भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है

١٤- بَابُ ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ، وَمَوْلَى الْقَوْمِ مِنْهُمْ

3528. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार को ख़ास तौर से एक मर्तबा बुलाया, फिर उनसे पूछा क्या तुम लोगों मे कोई ऐसा शख़्स भी रहता है जिसका ता'ल्लुक़ तुम्हारे क़बीले से न हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि सिर्फ़ हमारा एक भांजा ऐसा है। आपने फ़र्माया कि भांजा भी उसी क़ौम में दाख़िल होता है।

٣٥٢٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَعَا النَّبِيُّ ﷺ الأَنْصَارَ فَقَالَ: ((هَلْ فِيكُمْ أَحَدٌ مِنْ غَيْرِكُمْ؟)) قَالُوا: لاَ إِلاَّ ابْنُ أُخْتٍ لَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ابْنُ أُخْتِ الْقَومِ مِنْهُمْ)).

तश्रीह : अंसार के इस बच्चे का नाम नोअ़मान बिन मुक़रिन था। इमाम अहमद की रिवायत में उसकी सराहत है। बाब का तर्जुमा में मौला का ज़िक्र है लेकिन इमाम बुख़ारी मौला (आज़ादकर्दा गुलाम) की कोई हदीष़ नहीं लाए। कुछ ने कहा उन्होंने मौला के बाब में कोई हदीष़ अपनी शर्त पर नहीं पाई होगी। हाफ़िज़ ने कहा ये सहीह नहीं है क्योंकि इमाम बुख़ारी (रह) ने फ़राइज़ में ये हदीष़ निकाली है कि किसी क़ौम का मौला भी उन ही में दाख़िल है और मुम्किन है कि इमाम बुख़ारी (रह) ने इस हदीष़ के दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया हो जिसको बज़्ज़ार ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से निकाला है। उसमें मौला और हलीफ़ और भांजे तीनों मज़्कूर हैं। तैसीर में है कि हनीफ़ा ने उसी हदीष़ से दलील ली है कि जब अ़स्बा और ज़ुल् फ़ुरूज़ न हों तो भांजा मामूँ का वारिष़ होगा।

قَالَ : كَيْفَ بِنَسَبِي؟ فَقَالَ: لأَسُلَّنَّكَ مِنْهُمْ كَمَا تُسَلُّ الشَّعْرَةُ مِنَ الْعَجِيْنِ)). وَعَنْ أَبِيْهِ قَالَ : ((ذَهَبْتُ أَسُبُّ حَسَّانَ عِنْدَ عَائِشَةَ فَقَالَتْ : لاَ تَسُبَّهُ، فَإِنَّهُ كَانَ يُنَافِحُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ)).

[طرفاه في: ٤١٤٥، ٦١٥٠].

फिर मैं भी तो उन ही के ख़ानदान से हूँ। इस पर ह़स्सान (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया कि मैं आपको (शे'र में) इस त़रह़ स़ाफ़ निकाल ले जाऊँगा जैसे आटे में से बाल निकाल लिया जाता है और (हिशाम ने) अपने वालिद से रिवायत किया कि उन्होंने कहा, ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) के यहाँ मैं ह़स्सान (रज़ि.) को बुरा कहने लगा तो उन्होंने फ़र्माया, उन्हें बुरा न कहो, वो नबी करीम (ﷺ) की त़रफ़ से मुदाफ़िअ़त किया करते थे। (दीगर मक़ाम : 4145, 6150)

तश्रीह : ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि.) एक मौक़े पर बहक गये थे। या'नी ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) पर तोहमत लगाने वालों के हम नवा हो गये थे बाद में ये ताईब हो गये मगर कुछ दिलों में ये वाक़िया याद रहा मगर ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने ख़ुद उनकी मदह़ (ता'रीफ़) की और उनको अच्छे लफ़्ज़ों से याद किया जैसा कि यहाँ मज़्कूर है। मुश्रिकीन जो आँह़ज़रत (ﷺ) की बुराइयाँ करते ह़ज़रत ह़स्सान उनका जवाब देते और जवाब भी कैसा कि मुश्रिकीन के दिलों पर सांप लौटने लग जाता। ह़ज़रत ह़स्सान (रज़ि.) के बहुत से क़सीदे मज़्कूर हुए हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुश्रिकीने क़ुरैश की बिला ज़रूरत हिज्व को पसन्द नहीं फ़र्माया, यही बाब का मक़सद है।

١٧ - بَابُ مَا جَاءَ فِي أَسْمَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِّجَالِكُمْ﴾ الآيَةَ وَقَوْلِهِ ﴿مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ، وَالَّذِيْنَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ﴾ [الفتح : ٢٩]. وَقَوْلِهِ: ﴿مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ﴾ [الصف : ٦]

बाब 17 : रसूलुल्लाह (ﷺ) के नामों का बयान

और अल्लाह तआ़ला का सूरह अह़ज़ाब में इर्शाद कि, मुह़म्मद (ﷺ) तुममें से किसी मर्द के बाप नहीं हैं और अल्लाह तआ़ला का सूरह फ़तह़ में इर्शाद कि, मुह़म्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वो कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में इंतिहाई सख़्त होते हैं और सूरह स़फ़्फ़ में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि, मिम् बअ़दी इस्मुहू अह़मद

तश्रीह : ये ह़ज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) का क़ौल है कि मेरे बाद आने वाले रसूल का नाम अह़मद होगा। बाब का मत़लब यूँ ष़ाबित हुआ कि यहाँ आयतों में आपके नाम मुह़म्मद और अह़मद मज़्कूर हुए (ﷺ)। कुफ़्फ़ार से ह़र्बी काफ़िर जो बाज़ाब्ता इस्लाम और मुसलमानों के इस्तिह़स़ाल (शोषण) के लिये जारेह़ाना ह़मलावर हों। मुराद है कि ऐसे लोगों के ह़मले का मुदाफ़िआ़ना जवाब देना और सख़्ती के साथ फ़साद को मिटाकर अमन क़ायम करना ये सच्चे मुह़म्मदियों की ख़ास़ अ़लामत है।

٣٥٣٢ - حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَعْنٌ عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيْهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لِي خَمْسَةُ أَسْمَاءٍ: أَنَا مُحَمَّدٌ،

3532. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा कि मुझसे मअ़न ने कहा, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे मुह़म्मद बिन जुबैर बिन मुत़इम ने और उनसे उनके वालिद (जुबैर बिन मुत़इम (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे पाँच नाम हैं। मैं मुह़म्मद, अह़मद और माह़ी हूँ (या'नी मिटाने वाला हूँ) कि अल्लाह तआ़ला मेरे ज़रिये कुफ़्र को मिटाएगा

وَأَنَا أَحْمَدُ، وَأَنَا الْمَاحِيُ الَّذِيْ يَمْحُوا اللهُ بِهِ الْكُفْرَ، وَأَنَا الْحَاشِرَ الَّذِي يُحشَرُ النَّاسُ عَلَى قَدَمِي، وَأَنَا الْعَاقِبُ)).

[طرفه في : ٤٨٩٦].

और मैं ह़ाशिर हूँ कि तमाम इंसानों का (क़यामत के दिन) मेरे बाद ह़श्र होगा और मैं आक़िब हूँ या'नी ख़ातिमुन् नबिय्यीन हूँ, मेरे बाद कोई नया पैग़म्बर दुनिया में नहीं आएगा। (दीगर मक़ाम : 4896)

इस ह़दीष़ से रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ है कि आप (ﷺ) के बाद कोई भी नुबुव्वत का दा'वा करे वो झूठा दज्जाल है।

٣٥٣٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلاَ تَعْجَبُونَ كَيْفَ يَصْرِفُ اللهُ عَنِّي شَتْمَ قُرَيْشٍ وَلَعْنَهُمْ؟ يَشْتِمُونَ مُذَمَّماً، وَيَلْعَنُونَ مُذَمَّماً، وَأَنَا مُحَمَّدٌ)).

3533. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ता'ज्जुब नहीं होता कि अल्लाह तआ़ला क़ुरैश की गालियों और ला'नत मलामत को किस त़रह़ दूर करता है, मुझे वो मुज़म्मम कहकर बुरा कहते, उस पर ला'नत करते हैं। ह़ालाँकि मैं तो मुह़म्मद हूँ। (ﷺ)

तश्रीह़ : अरब के काफ़िर दुश्मनी से आपको मुह़म्मद (ﷺ) नहीं कहते बल्कि उसकी ज़िद में मुज़म्मम नाम से आपको पुकारते या'नी मज़म्मत किया हुआ बुरा। आपने फ़र्माया कि मुज़म्मम मेरा नाम ही नहीं है। जो मुज़म्मम होगा उसी पर उनकी गालियाँ पड़ेंगीं। ह़ाफ़िज़ (रह) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) के और भी नाम वारिद हुए हैं जैसे रऊफ़, रह़ीम, बशीर, नज़ीर, मुबीन, दाई इलल्लाह, सिराज, मुनीर, मुज़क्किर, रह़मत, नेअ़मत, हादी, शहीद, अमीन, मुज़्ज़म्मिल, मुद्दष़्षिर, मुतवक्किल, मुख़्तार, मुस्त़फ़ा, शफ़ीअ़, मुश्फ़िआ़, स़ादिक़, मस़्दूक़ वग़ैरह वग़ैरह, कुछ ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) के नाम भी अस्माउल हुस्ना की त़रह़ निन्नावे तक पहुँचते हैं, अगर मज़ीद तलाश किये जाएँ तो सौ तक मिल सकेंगे (ﷺ)। मुबारक नाम मुह़म्मद (ﷺ) के बारे में ह़ाफ़िज़ (रह) फ़र्माते हैं, **अय अल्लज़ी हमिद मर्रतिन बअ़द मर्तिन औ अल्लज़ी तकामलत फ़ीहिल्ख़िस़ालुल्महमूदतु क़ाल अयाज़ कान रसूलुल्लाहि (ﷺ) अहमद क़ब्ल अंय्यकून मुहम्मद कमा वक़अ फ़िल्वुजूदि लिअन्न तस्मियत अह़मद वक़अ़त फ़िल्कुतुबिस्सालिफ़ति व तस्मिय्यतु मुहम्मद वक़अ़त फ़िल्क़ुर्आनिल्अ़ज़ीम व ज़ालिक अन्नहू हमिद रब्बहू क़ब्ल अय्युहम्मिदहुन्नासु व कज़ालिक फ़िल्आख़िरति बिह़म्दि रब्बिही फ़यश्फ़उहू फ़यहमिदुहुन्नासु व क़द खस्स बिसूरतिल्हम्दि व बिलवाइल्हम्दि व बिल्मक़ामिल्महमूदि व शरअ लहुल्हम्द बअ़दल्अक्लि वश्शुर्बि व बअ़दहुआइ व बअ़दल्क़ुदूमि मिनस्सफ़रि व सुम्मियत उम्मतुहू अल्हम्मादीन फ़जुमिअ़त लहू मआ़निल्हम्दि व अन्वाउहू (ﷺ)।** (फ़त्हुल बारी)

١٨- بَابُ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ﷺ

बाब 18 : आँह़ज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना

तश्रीह़ : आँह़ज़रत (ﷺ) पर अल्लाह तआ़ला ने सिलसिल-ए-नुबुव्वत ख़त्म कर दिया, अब क़यामत तक कोई और नबी नहीं हो सकता न ज़िल्ली हो सकता है न बरौज़ी, न ह़क़ीक़ी हो सकता है, न मजाज़ी। आप क़यामत तक के लिये आख़िरी नबी हैं जैसे सूरज निकलने के बाद किसी चराग़ की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती। आप ऐसे कामिल व मुकम्मल नबी हैं कि अब न किसी नई शरीअ़त और नये पैग़म्बर की ज़रूरत है और न अब क़ुर्आन के बाद किसी नई किताब की ज़रूरत है। ये वो अ़क़ीदा है जिस पर चौदह सौ बरस से पूरी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है मगर स़द अफ़सोस कि इस मुल्क में पंजाब में मिर्ज़ा क़ादयानी ने इस अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ अपनी नुबुव्वत का चर्चा किया और वह्य व इल्हाम के मुद्दई हुए और वो आयात व अह़ादीष़ जिनसे आँह़ज़रत (ﷺ) का ख़ातिमुन्नबिय्यीन होना ष़ाबित होता है उनकी ऐसी ऐसी दूर अज़्कार तावीलाते फ़ासिदा कीं कि फ़िल् वाक़ेअ

दजल का ह़क़ अदा कर दिया। उ़लमा-ए-इस्लाम बिल ख़ुसूसन हमारे उस्ताज़ मरहूम ह़ज़रत मौलाना षनाउल्लाह स़ाह़ब अमृतसरी ने उनके दा'वा-ए-नुबुव्वत की तर्दीद में बहुत सी फाज़िलाना किताबें लिखी हैं। ऐसे मुद्दइयाने नुबुव्वत इन अह़ादीषे नबवी के मिस्दाक़ हैं जिनमें आपने ख़बर दी है कि मेरी उम्मत में कुछ ऐसे दज्जाल लोग पैदा होंगे जो नुबुव्वत का दा'वा करेंगे। अल्लाह पाक हर मुसलमान को ऐसे गुमराहकुन लोगों के ख़यालाते फासिदा से महफ़ूज़ रखे आमीन।

3534. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैम ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन मीनाअ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी और दूसरे अंबिया की मिषाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने कोई घर बनाया, उसे ख़ूब आरास्ता पैरास्ता करके मुकम्मल कर दिया। सिर्फ़ एक ईंट की जगह ख़ाली छोड़ दी। लोग उस घर में दाख़िल होते और ता'ज्जुब करते और कहते काश ये एक ईंट की जगह ख़ाली न रहती तो कैसा अच्छा मुकम्मल घर होता।

٣٥٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا سَلِيْمُ حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ مِيْنَاءَ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَثَلِي وَمَثَلُ الأَنْبِيَاءِ كَرَجُلٍ بَنَى دَارًا فَأَكْمَلَهَا وَأَحْسَنَهَا، إِلاَّ مَوضِعَ لَبِنَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَدْخُلُونَهَا وَيَتَعَجَّبُونَ وَيَقُولُونَ: لَو لاَ مَوضِعُ اللَّبِنَةِ)).

मेरी नुबुव्वत ने उस कमी को पूरा कर दिया। अब मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

3535. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी और मुझसे पहले की तमाम अंबिया की मिषाल ऐसी है जैसे एक शख़्स ने एक घर बनाया और उसमें हर त़रह की ज़ीनत पैदा की लेकिन एक कोने में एक ईंट की जगह छूट गई। अब तमाम लोग आते हैं और मकान को चारों त़रफ़ से घूमकर देखते हैं और ता'ज्जुब करते हैं लेकिन ये भी कहते जाते हैं कि यहाँ पर एक ईंट क्यूँ न रखी गई? तो मैं ही वो ईंट हूँ और मैं खतिमुन्नबिय्यीन हूँ।

٣٥٣٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ جَعْفَرٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِيْنَارٍ عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ مَثَلِي وَمَثَلَ الأَنْبِيَاءِ مِنْ قَبْلِي كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى بَيْتًا فَأَحْسَنَهُ وَأَجْمَلَهُ، إِلاَّ مَوضِعَ لَبِنَةٍ مِنْ زَاوِيَةٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَطُوفُونَ بِهِ وَيَعْجَبُونَ لَهُ وَيَقُولُونَ : هَلاَّ وُضِعَتْ هَذِهِ اللَّبِنَةُ؟ قَالَ : فَأَنَا اللَّبِنَةُ، وَأَنَا خَاتِمُ النَّبِيِّينَ)).

बाब 19 : नबी अकरम (ﷺ) की वफ़ात का बयान

١٩- بَابُ وَفَاةِ النَّبِيِّ ﷺ

3536. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने 63 साल की उ़म्र में वफ़ात पाई और इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यिब ने इसी त़रह बयान किया।

٣٥٣٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: ((أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ تُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّيْنَ)). وَقَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي سَعِيْدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ مِثْلَهُ.

62. किताब फ़ज़ाइले अस्हाबुन्नबी (ﷺ)

नबी-करीम (ﷺ) के सहाबा की फ़ज़ीलत

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

बाब 1 : नबी करीम (ﷺ) के सहाबियों की फ़ज़ीलत का बयान

١ - بَابُ فَضَائِلِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ، وَمَنْ صَحِبَ النَّبِيَّ ﷺ أَوْ رَآهُ مِنُ الْمُسْلِمِيْنَ فَهُوَ فِي أَصْحَابِهِ

(इमाम बुख़ारी (रह) ने कहा कि) जिस मुसलमान ने भी आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत उठाई या आपका दीदार उसे नसीब हुआ हो वो आप (ﷺ) का सहाबी है।

तश्रीह : जुम्हूर उलमा का यही क़ौल है कि जिसने अपनी ज़िन्दगी में आँहज़रत (ﷺ) को एक बार भी देखा हो वो सहाबी है बशर्ते कि वो मुसलमान हो। बस आँहज़रत (ﷺ) को एक बार देख लेना ऐसा शर्फ़ है कि सारी उम्र का मुजाहिदा उसके बराबर नहीं हो सकता। कुछ ने कहा कि औलिया अल्लाह जिन सहाबा के मर्तबे को नहीं पहुँच सकते उनसे मुराद वो सहाबा हैं जो आपकी सुहबत में रहे और आपसे इस्तिफ़ादा किया और आपके साथ जिहाद किया, मगर ये क़ौल मरजूह है। हमारे पीर व मुर्शिद महबूब सुब्हानी हज़रत सय्यद जीलानी (रह) फ़र्माते हैं कि कोई वली अदना सहाबी के मर्तबे के बराबर नहीं पहुँच सकता है। (वहीदी)

3649. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया और उन्होंने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, एक ज़माना आएगा कि अहले इस्लाम की जमाअतें जिहाद करेंगी तो उनसे पूछा जाएगा कि क्या तुम्हारे साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) के कोई सहाबी भी हैं? वो कहेंगे कि हाँ हैं। तब उनकी फ़तह होगी। फिर एक ऐसा ज़माना आएगा कि मुसलमानों की जमाअतें जिहाद करेंगी और उस मौक़े पर ये पूछा जाएगा कि क्या यहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबी की सुहबत उठाने वाले (ताबेई) भी मौजूद हैं?

٣٦٤٩ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ حَدَّثَنَا أَبُو سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ، فَيَقُولُونَ: فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ رَسُولَ اللهِ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ لَهُمْ: نَعَمْ. فَيُفْتَحُ لَهُمْ. ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ

जवाब होगा कि हाँ हैं और उनके ज़रिये फ़तह की दुआ मांगी जाएगी। उसके बाद एक ज़माना ऐसा आएगा कि मुसलमानों की जमाअतें जिहाद करेंगी और उस वक़्त सवाल उठेगा कि क्या यहाँ कोई बुज़ुर्ग ऐसे हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के सहाबा के शागिर्दों में से किसी बुज़ुर्ग की सुह्बत में रहे हो? जवाब होगा कि हाँ हैं तो उनके ज़रिये फ़तह की दुआ मांगी जाएगी फिर उनकी फ़तह होगी।

(राजेअ : 2897)

أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ لَهُمْ. ثُمَّ يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ فَيَغْزُو فِئَامٌ مِنَ النَّاسِ فَيُقَالُ: هَلْ فِيكُمْ مَنْ صَاحَبَ مَنْ صَاحَبَ أَصْحَابَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَيَقُولُونَ: نَعَمْ، فَيُفْتَحُ لَهُمْ)).

[راجع: ٢٨٩٧]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) ने उन तीन ज़माने वालों की फ़ज़ीलत बयान की गोया वो ख़ैरुल क़ुरून ठहरे। इसीलिये उलमा ने बिदअत की ता'रीफ़ ये क़रार दी है कि दीन में जो काम नया निकाला जाए जिसका वजूद इन तीन ज़मानों में न हो। ऐसी हर बिदअत गुमराही है और जिन लोगों ने बिदअत की तक़्सीम की है और हस्ना और सय्या की तरफ़, उनकी मुराद बिदअत से बिदअते लग़्वी है। हमारे मुर्शिद शैख़ अहमद मुजद्दिद सरहिन्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि मैं तो किसी बिदअत में सिवाय ज़ुल्मत और तारीकी के मुत्लक़ नूर नहीं पाता। (वहीदी)

3650. मुझसे इस्हाक़ बिन राहवै ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें अबू जम्रह ने, कहा मैंने ज़ह्दम बिन मुज़र्रब से सुना, कहा कि मैंने हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी उम्मत का सबसे बेहतरीन ज़माना मेरा ज़माना है। फिर उन लोगों का जो इस ज़माने के बाद आएँगे, फिर उन लोगों का जो उस ज़माने के बाद आएँगे। हज़रत इमरान (रज़ि.) कहते हैं कि मुझे याद नहीं कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपने दौर के बाद दो ज़मानों का ज़िक्र किया या तीन का। फिर आपने फ़र्माया कि तुम्हारे बाद एक ऐसी क़ौम पैदा होगी जो बग़ैर कहे गवाही देने के लिये तैयार हो जाया करेगी और उनमें ख़यानत और चोरी इतनी आम हो जाएगी कि उन पर किसी क़िस्म का भरोसा बाक़ी नहीं रहेगा, और नज़्रें मानेंगे लेकिन उन्हें पूरा नहीं करेंगे (हराम माल खा खाकर) उन पर मोटापा आम हो जाएगा। (राजेअ : 2651)

٣٦٥٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ حَدَّثَنَا النَّضْرُ أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي جَمْرَةَ سَمِعْتُ زَهْدَمَ بْنَ مُضَرِّبٍ سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((خَيْرُ أُمَّتِي قَرْنِي، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ)) قَالَ عِمْرَانُ : فَلاَ أَدْرِي أَذَكَرَ بَعْدَ قَرْنِهِ قَرْنَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا. ثُمَّ إِنَّ بَعْدَكُمْ قَوْمًا يَشْهَدُونَ وَلاَ يُسْتَشْهَدُونَ وَيَخُونُونَ وَلاَ يُؤْتَمَنُونَ، وَيَنْذُرُونَ وَلاَ يَفُونَ، وَيَظْهَرُ فِيهِمُ السِّمَنُ)).

[راجع: ٢٦٥١]

ख़ैरुल क़ुरून के बाद होने वाले दुनियादार नामो-निहाद मुसलमानों के बारे में ये पेशगोई है जो अख़्लाक़ और आमाल के ए'तिबार से बदतरीन क़िस्म के लोग होंगे। जैसा कि इर्शाद हुआ है कि झूठ और बद दयानती और दुनियासाज़ी उनका रात दिन का मश्ग़ला होगा। **अल्लाहुम्म ला तज्अल्ना मिन्हुम**, आमीन।

3651. हमसे मुहम्मद बिन कषीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान षौरी ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उबैदा बिन क़ैस सलमानी ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेहतरीन

٣٦٥١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ

ह़ाज़िर हुआ। आप भी बेदार हो चुके थे। मैंने अ़र्ज़ किया-दूध पी लीजिए। आपने इतना पिया कि मुझे ख़ुशी ह़ासिल हो गई। फिर मैंने अ़र्ज़ किया कि अब कूच का वक़्त हो गया है या रसूलल्लाह! आपने फ़र्माया हाँ ठीक है, चलो। चुनाँचे हम आगे बढ़े और मक्का वाले हमारी तलाश में थे लेकिन सुराक़ा बिन मालिक बिन जअ़शम के सिवा हमको किसी ने नहीं पाया। वो अपने घोड़े पर सवार था। मैंने उसे देखते ही कहा कि या रसूलल्लाह! हमारा पीछा करने वाला दुश्मन हमारे क़रीब आ पहुँचा है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि फिक्र न करो। अल्लाह तआ़ला हमारे साथ है। (राजेअ़ : 2439)

ﷺ فَوَافَقْتُهُ قَدِ اسْتَيْقَظَ، فَقُلْتُ: اشْرَبْ يَا رَسُولَ اللهِ، فَشَرِبَ حَتَّى رَضِيتُ. ثُمَّ قُلْتُ: قَدْ آنَ الرَّحِيلُ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((بَلَى)). فَارْتَحَلْنَا وَالْقَوْمُ يَطْلُبُونَنَا، فَلَمْ يُدْرِكْنَا أَحَدٌ مِنْهُمْ غَيْرُ سُرَاقَةَ بْنِ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ عَلَى فَرَسٍ لَهُ، فَقُلْتُ: هَذَا الطَّلَبُ قَدْ لَحِقَنَا يَا رَسُولَ اللهِ، فَقَالَ: ((لاَ تَحْزَنْ، إِنَّ اللهَ مَعَنَا)) ﴿تُرِيحُونَ﴾

[راجع: ٢٤٣٩]

वाक़िय-ए-हिजरत ह़याते नबवी का एक अहम वाक़िया है जिसमें आपके बहुत से मुअजिज़ात का ज़ुहूर हुआ यहाँ भी चन्द मुअजिज़ात का बयान हुआ है चुनाँचे बाब मुहाजिरीन के फ़ज़ाइल के बारे में है, इसलिये उसमें हिजरत के इब्तिदाई वाक़ियात को बयान किया गया है। यही बाब और ह़दीष़ का ता'ल्लुक़ है।

3653. हमसे मुह़म्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने, उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम ग़ारे ष़ौर में छुपे थे तो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि अगर मुश्रिकीन के किसी आदमी ने अपने क़दमों पर नज़र डाली तो वो ज़रूर हमको देख लेगा। उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अबूबक्र! उन दो का कोई क्या बिगाड़ सकता है जिनके साथ तीसरा अल्लाह तआ़ला है। (दीगर मक़ाम : 3922, 4663)

٣٦٥٣ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ عَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ ﷺ وَأَنَا فِي الْغَارِ: لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ نَظَرَ تَحْتَ قَدَمَيْهِ لأَبْصَرَنَا. فَقَالَ: ((مَا ظَنُّكَ يَا أَبَا بَكْرٍ بِاثْنَيْنِ اللهُ ثَالِثُهُمَا)).

[طرفاه في: ٣٩٢٢، ٤٦٦٣].

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का हुक्म फ़र्माना कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के दरवाज़े को छोड़कर (मस्जिदे नबवी की त़रफ़ के) तमाम दरवाज़े बन्द कर दो. ये ह़दीष़ ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत की है.

٣- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((سُدُّوا الأَبْوَابَ إِلاَّ بَابَ أَبِي بَكْرٍ، قَالَهُ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

3654. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे अबू आमिर ने बयान किया, उनसे फ़ुलैह बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मुझसे सालिम अबुन् नज़्र ने बयान किया, उनसे

٣٦٥٤ - حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمٌ أَبُو النَّضْرِ عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ عَنْ

बुस्र बिन सईद ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया कि अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे को दुनिया में और जो कुछ अल्लाह के पास आख़िरत में है उन दोनों में से किसी एक का इख़्तियार दिया तो उस बन्दे ने इख़्तियार कर लिया जो अल्लाह के पास था। उन्होंने बयान किया कि इस पर अबूबक्र (रज़ि.) रोने लगे। अबू सईद कहते हैं कि हमको उनके रोने पर हैरत हुई कि आँहज़रत (ﷺ) तो किसी बन्दे के बारे में ख़बर दे रहे हैं जिसे इख़्तियार दिया गया था। लेकिन बात ये थी कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ही वो बन्दे थे जिन्हें इख़्तियार दिया गया था और (वाक़िअतन, वास्तव में) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) हममें सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। आँहज़रत (ﷺ) ने एक मर्तबा फ़र्माया कि अपनी सुहबत और माल के ज़रिये मुझ पर अबूबक्र का सबसे ज़्यादा एहसान है और अगर मैं अपने रब के सिवा किसी को जानी दोस्त बना सकता तो अबूबक्र को बनाता, लेकिन इस्लाम का भाईचारा और इस्लाम की मुहब्बत उनसे काफ़ी है, देखो मस्जिद की तरफ़ तमाम दरवाज़े (जो सहाबा के घरों की तरफ़ खुलते थे) सब बन्द कर दिये जाएँ सिर्फ़ अबूबक्र (रज़ि.) का दरवाज़ा रहने दो। (राजेअ: 466)

أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ النَّاسَ وَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ خَيَّرَ عَبْدًا بَيْنَ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ ذَلِكَ الْعَبْدُ مَا عِنْدَ اللهِ)). قَالَ فَبَكَى أَبُوبَكْرٍ، فَعَجِبْنَا لِبُكَائِهِ أَنْ يُخْبِرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ عَبْدٍ خُيِّرَ، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ الْمُخَيَّرُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ أَعْلَمَنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مَنْ أَمَنَّ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَالِهِ أَبَا بَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيْلاً غَيْرَ رَبِّي لاَتَّخَذْتُ أَبَا بَكْرٍ، وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الإِسْلاَمِ وَمَوَدَّتُهُ، لاَ يَبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ بَابٌ إِلاَّ سُدَّ، إِلاَّ بَابَ أَبِي بَكْرٍ)).

[راجع: ٤٦٦]

हदीष और बाब में मुताबक़त ज़ाहिर है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को एक मुम्ताज़ मुक़ाम अता फ़र्माया और आज तक मस्जिदे नबवी में ये तारीख़ी जगह महफ़ूज़ रखी गई है।

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की दूसरे सहाबा पर फ़ज़ीलत का बयान

٤- بَابُ فَضْلِ أَبِي بَكْرٍ بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ

3655. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने ही में जब हमें सहाबा के दरम्यान इंतिख़ाब के लिये कहा जाता तो सबमें अफ़ज़ल और बेहतर हम अबूबक्र (रज़ि.) को क़रार देते, फिर उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को फिर उष्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) को।

(दीगर मक़ाम : 3697)

٣٦٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيْزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ يَحْيَى بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((كُنَّا نُخَيِّرُ بَيْنَ النَّاسِ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ فَنُخَيِّرُ أَبَا بَكْرٍ، ثُمَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ، ثُمَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ)).

[طرفه في: ٣٦٩٧].

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने मज़हबे जुम्हूर की तरफ़ इशारा किया है कि तमाम सहाबा मे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को फ़ज़ीलत हासिल है। अकषर सलफ़ का यही क़ौल है और ख़ल्फ़ में से भी अकषर ने यही कहा है।

है (या'नी जब मय्यत का बाप ज़िन्दा न हो तो बाप का हिस्सा दादा की तरफ़ लौट जाएगा या'नी बाप की जगह दादा वारिष़ होगा)।

أَنْزَلَهُ أَبًا، يَعْنِي أَبَا بَكْرٍ)).

3659. हमसे हुमैदी और मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुतइम ने और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि एक औरत नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आई तो आपने उनसे फ़र्माया कि फिर आइयो। उसने कहा, अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ तो? गोया वो वफ़ात की तरफ़ इशारा कर रही थी। आपने फ़र्माया कि अगर तुम मुझे न पा सको तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास चली आना। (दीगर मक़ाम : 7220, 7360)

٣٦٥٩- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ وَمُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالاَ: حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيْهِ قَالَ: ((أَتَتِ امْرَأَةٌ النَّبِيَّ ﷺ فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ، قَالَتْ : أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ - كَأَنَّهَا تَقُولُ الْمَوْتَ - قَالَ ﷺ: ((إِنْ لَمْ تَجِدِيْنِي فَأْتِي أَبَابَكْرٍ)). [طرفاه في : ٧٢٢٠، ٧٣٦٠].

तश्रीह : इस ह़दीष़ से ये निकलता है कि आपको बज़रिये वह्य मा'लूम हो चुका था कि आपके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आपके ख़लीफ़ा होंगे। त़बरानी ने अ़स्मा बिन मालिक से निकाला, हमने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपके बाद अपने मालों की ज़कात किसको दें? आपने फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) को देना, उसकी सनद ज़ईफ़ है। मुअ़जम में सहल बिन अबी खुषैमा से निकाला कि आपसे एक गंवार ने बेअ़त की और पूछा कि अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो मैं किसके पास आऊँ? फ़र्माया, अबूबक्र के पास। उसने कहा अगर वो मर जाएँ तो फिर किसके पास? फ़र्माया उ़मर (रज़ि.) के पास। इन रिवायतों से शियाओं का रद्द होता है जो कहते हैं कि आँह़ज़रत (ﷺ) अपने बाद अ़ली (रज़ि.) को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर गये थे।

3660. हमसे अह़मद बिन अबी त़य्यब ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी मुजालिद ने बयान किया, उनसे बयान बिन बिश्र ने कहा, उनसे वबरह बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे हम्माम ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़म्मार (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस वक़्त देखा है जब आपके साथ (इस्लाम लाने वालों में सिर्फ़) पाँच ग़ुलाम, दो औरतों और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के सिवा और कोई न था। (दीगर मक़ाम : 3857)

٣٦٦٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي الطَّيِّبِ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ مُجَالِدٍ حَدَّثَنَا بَيَانُ بْنُ بِشْرٍ عَنْ وَبْرَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ هَمَّامٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَمَّارًا يَقُولُ: ((رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَا مَعَهُ إِلاَّ خَمْسَةُ أَعْبُدٍ وَامْرَأَتَانِ وَأَبُو بَكْرٍ)).[طرفه في : ٣٨٥٧].

ग़ुलाम ये थे बिलाल, ज़ैद बिन हारिष़ा, आमिर बिन फ़ुहैरा, अबू फ़कीह और उ़बैद बिन ज़ैद ह़ब्शी, औरतें ह़ज़रत ख़दीजा और उम्मे ऐमन थीं या सुमय्या। ग़र्ज़ आज़ाद मर्दों में सबसे पहले ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ईमान लाए। बच्चों में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) औरतो में ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.)।

3661. मुझसे हिशाम बिन अ़म्मार ने बयान किया, कहा हमसे स़दक़ा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन वाक़िदने बयान किया, उनसे बुस्र बिन उ़बैदुल्लाह ने, उनसे आइज़ुल्लाह अबू इदरीस ने और उनसे ह़ज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि ह़ज़रत अबूबक्र (रजि) अपने कपड़े का किनारा पकड़े हुए, घुटना खोले हुए आए।

٣٦٦١- حَدَّثَنِي هِشَامُ بْنُ عَمَّارٍ حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ خَالِدٍ حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَاقِدٍ عَنْ بُسْرِ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عَائِذِ اللهِ أَبِي إِدْرِيْسَ عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ

हदीष़ में ये फ़र्माया था कि जो अपनी इज़ार घसीटते चले। तो उन्होंने कहा कि मैंने तो उनसे यही सुना कि जो कोई अपना कपड़ा लटकाए। (दीगर मक़ाम : 5783, 5791, 6062)

لَمْ أَسْمَعْهُ ذَكَرَ إِلاَّ ((ثَوْبَهُ)).

[أطرافه في : ٥٧٨٣، ٥٧٩١، ٦٠٦٢].

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि **इन्नमल्आमालु बिन्नियात**, अगर कोई अपनी इज़ार टख़ने से ऊँची भी रखे और मग़रूर हो तो उसकी तबाही यक़ीनी है। अगर बिला क़स्द और बिला निय्यते ग़ुरूर लटक जाए तो वो इस वईद में दाख़िल न होगा। ये हर कपड़े को शामिल है। इज़ार हो या पाजामा या कुर्ता की आस्तीन बहुत बड़ी बड़ी रखना, अगर ग़ुरूर की राह से ऐसा करे तो सख़्त गुनाह और हराम है। आज के दौर में अज़्राहे किब्र व ग़ुरूर कोट पतलून इस तरह पहनने वाले इसी वईद में दाख़िल हैं।

3666. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुऐब ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे ह मीद बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जिसने अल्लाह के रास्ते में किसी चीज़ का एक जोड़ा ख़र्च किया (मष़लन दो रुपये, दो कपड़े, दो घोड़े अल्लाह तआ़ला के रास्ते में दिये) तो उसे जन्नत के दरवाज़ों से बुलाया जाएगा कि ऐ अल्लाह के बन्दे! इधर आ, ये दरवाज़ा बेहतर है पस जो शख़्स़ नमाज़ी होगा उसे नमाज़ के दरवाज़े से बुलाया जाएगा, जो शख़्स़ मुजाहिद होगा उसे जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। जो शख़्स़ अहले स़दक़ा में से होगा उसे स़दक़ा के दरवाज़े से बुलाया जाएगा और जो शख़्स़ रोज़ेदार होगा उसे स़ियाम और रय्यान (सैराबी) के दरवाज़े से बुलाया जाएगा। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया जिस शख़्स़ को इन तमाम ही दरवाज़ों से बुलाया जाएगा फिर तो उसे किसी क़िस्म का डर बाक़ी नहीं रहेगा और पूछा क्या कोई शख़्स़ ऐसा भी होगा जिसे उन तमाम दरवाज़ों से बुलाया जाए या रसूलल्लाह! आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ और मुझे उम्मीद है तुम भी उन्हीं में से होंगे ऐ अबूबक्र!

(राजेअ़ : 1897)

٣٦٦٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ: يَقُولُ : ((مَنْ أَنْفَقَ زَوْجَيْنِ مِنْ شَيْءٍ مِنَ الأَشْيَاءِ فِي سَبِيْلِ اللهِ دُعِيَ مِنْ أَبْوَابِ - يَعْنِي الْجَنَّةَ - يَا عَبْدَ اللهِ هَذَا خَيْرٌ. فَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّلاَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّلاَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الْجِهَادِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الْجِهَادِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصَّدَقَةِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصَّدَقَةِ، وَمَنْ كَانَ مِنْ أَهْلِ الصِّيَامِ دُعِيَ مِنْ بَابِ الصِّيَامِ وَبَابِ الرَّيَّانِ)). فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: مَا عَلَى هَذَا الَّذِي يُدْعَى مِنْ تِلْكَ الأَبْوَابِ مِنْ ضَرُورَةٍ. وَقَالَ : هَلْ يُدْعَى مِنْهَا كُلِّهَا أَحَدٌ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ : ((نَعَمْ، وَأَرْجُوا أَنْ تَكُونَ مِنْهُمْ يَا أَبَا بَكْرٍ)).

[راجع: ١٨٩٧]

3667. मुझसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन

٣٦٦٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ عَنْ هِشَامِ بْنِ

उर्वा ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) की जब वफ़ात हुई तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) उस वक़्त मक़ामे सनह में थे। इस्माईल ने कहा या'नी अवाली के एक गाँव में। आपकी ख़बर सुनकर हज़रत उमर उठकर ये कहने लगे कि अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह (ﷺ) की वफ़ात नहीं हुई। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) कहा करते थे अल्लाह की क़सम! उस वक़्त मेरे दिल में यही ख़्याल आता था और मैं कहता था कि अल्लाह आपको ज़रूर इस बीमारी से अच्छा करके उठाएगा और आप उन लोगों के हाथ और पाँव काट देंगे (जो आपकी मौत की बातें करते हैं)। इतने में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तशरीफ़ ले आए और अंदर जाकर आपकी नअशे मुबारक के ऊपर से कपड़ा उठाया और बोसा दिया और कहा, मेरे बाप और माँ आप पर फिदा हों, आप ज़िन्दगी में भी पाकीज़ा थे और वफ़ात के बाद भी और उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अल्लाह तआला आप पर दो मर्तबा मौत हर्गिज़ तारी नहीं करेगा। उसके बाद आप बाहर आए और उमर (रज़ि.) से कहने लगे ऐ क़सम खाने वाले! ज़रा ताम्मुल कर। फिर जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने बातचीत शुरू की तो हज़रत उमर (रज़ि.) खामोश होकर बैठ गये। (राजेअ: 1241)

عُرْوَةَ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ ((أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ مَاتَ وَأَبُو بَكْرٍ بِالسُّنْحِ - قَالَ إِسْمَاعِيْلُ : يَعْنِي بِالْعَالِيَةِ - فَقَامَ عُمَرُ يَقُولُ : وَاللهِ مَا مَاتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. قَالَتْ وَقَالَ عُمَرُ: وَاللهِ مَا كَانَ يَقَعُ فِي نَفْسِي إِلاَّ ذَاكَ، وَلَيَبْعَثَنَّهُ اللهُ فَلَيَقْطَعَنَّ أَيْدِيَ رِجَالٍ وَأَرْجُلَهُمْ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ فَكَشَفَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَبَّلَهُ فَقَالَ : بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي، طِبْتَ حَيًّا وَمَيْتًا، وَاللهِ الَّذِيْ نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ يُذِيْقُكَ اللهُ الْمَوْتَتَيْنِ أَبَدًا. ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ : أَيُّهَا الْحَالِفُ، عَلَى رِسْلِكَ، فَلَمَّا تَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ جَلَسَ عُمَرُ)). [راجع ١٢٤١]

3668. हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने पहले अल्लाह की हम्दो-षना बयान की। फिर फ़र्माया लोगों देखो अगर कोई मुहम्मद (ﷺ) को पूजता था (या'नी ये समझता था कि वो आदमी नहीं हैं, वो कभी नहीं मरेंगे) तो उसे मा'लूम होना चाहिये कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की वफ़ात हो चुकी है और जो शख़्स अल्लाह की पूजा करता था तो अल्लाह हमेशा ज़िन्दा है उसे मौत कभी नहीं आएगी (फिर अबूबक्र रज़ि. ने सूरह ज़ुमर की ये आयत पढ़ी) ऐ नबी! तुम भी मरने वाले हो और वो भी मरेंगे। (अन् नज्म : 30) और अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि मुहम्मद (ﷺ) सिर्फ़ एक रसूल हैं। इससे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं। पस क्या अगर वो वफ़ात पा जाएँ या उन्हें शहीद कर दिया जाए तो तुम इस्लाम से फिर जाओगे और जो शख़्स अपनी ऐड़ियों के बल फिर जाए तो वो अल्लाह को कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा और अल्लाह अन्क़रीब शुक्रगुज़ार बन्दों का बदला देने वाला है। (आले इमरान

٣٦٦٨- ((فَحَمِدَ اللهَ أَبُو بَكْرٍ وَأَثْنَى عَلَيْهِ وَقَالَ: أَلاَ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ وَقَالَ : ﴿إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ﴾ [الزمر: ٣٠]. وَقَالَ: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ، أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ؟ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللهَ شَيْئًا، وَسَيَجْزِي اللهُ الشَّاكِرِيْنَ﴾ [آل عمران: ١٤٤]. قَالَ :

قَالَتْ: ((شَخَصَ بَصَرُ النَّبِيِّ ﷺ ثُمَّ قَالَ: فِي الرَّفِيقِ الأَعْلَى (ثَلاَثًا) وَقَصَّ الْحَدِيثَ. قَالَتْ عَائِشَةُ: فَمَا كَانَ مِنْ خُطْبَتِهِمَا مِنْ خُطْبَةٍ إِلاَّ نَفَعَ اللهُ بِهَا، لَقَدْ خَوَّفَ عُمَرُ النَّاسَ وَإِنَّ فِيهِمْ لَنِفَاقًا فَرَدَّهُمُ اللهُ بِذَلِكَ)). [راجع: ١٢٤١]

(ﷺ) की नज़र (वफ़ात से पहले) उठी और आपने फ़र्माया ऐ अल्लाह! मुझे रफ़ीक़े आला में (दाख़िल कर) आपने ये जुम्ला तीन मर्तबा फ़र्माया और पूरी हदीष़ बयान की। आइशा (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत अबूबक्र और उमर (रज़ि.) दोनों ही के ख़ुत्बों से नफ़ा पहुँचा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने लोगों को धमकाया क्योंकि उनमे कुछ मुनाफ़िक़ीन भी थे। इसलिये अल्लाह तआला ने इस त़रह (ग़लत़ अफ़वाहें फैलाने से) उनको बाज़ रखा। (राजेअ: 1241)

٣٦٧٠- ((ثُمَّ لَقَدْ بَصَّرَ أَبُو بَكْرٍ النَّاسَ الْهُدَى، وَعَرَّفَهُمُ الْحَقَّ الَّذِي عَلَيْهِمْ، وَخَرَجُوا بِهِ يَتْلُونَ: ﴿وَمَا مُحَمَّدٌ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ - إِلَى - الشَّاكِرِينَ﴾. [راجع: ١٢٤٢]

3670. और बाद में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने जो ह़क़ और हिदायत की बात थी वो लोगों को समझा दी और उनको बतला दिया जो उन पर लाज़िम था (या'नी इस्लाम पर क़ायम रहना) और वो ये आयत तिलावत करते हुए बाहर आए, मुहम्मद (ﷺ) एक रसूल हैं और उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं । अश्शाकिरीन तक। (राजेअ: 1242)

तश्रीह : ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के इस अ़ज़ीम ख़ुत्बा ने उम्मत केशीराज़े को मुंतशिर होने (बिखरने) से बचा लिया। अंसार ने जो दो अमीर मुक़र्रर करने की तज्वीज़ पेश की थी वो सह़ीह़ नहीं थी क्योंकि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रखी जा सकतीं। रिवायत में ह़ज़रत सअद बिन उ़बादा (रज़ि.) के लिये ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की बद दुआ मज़्कूर है। वही दो अमीर मुक़र्रर करने की तज्वीज़ लेकर आए थे। अल्लाह न करे इस पर अ़मल होता तो नतीजा बहुत ही बुरा होता। कहते हैं कि ह़ज़रत उ़बादा उसके बाद शाम के मुल्क को चले गये और वहीं आपका इंतिक़ाल हुआ। इस ह़दीष़ से नसबे ख़लीफ़ा का वुजूब षाबित हुआ क्योंकि स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) की तज्हीज़ व तक्फ़ीन पर भी उसको मुक़द्दम रखा, स़द अफ़सोस कि उम्मत ने जल्द ही इस फ़र्ज़ को फ़रामोश कर दिया। पहली ख़राबी ये पैदा हुई कि ख़िलाफ़त की जगह मलूकियत आ गई, फिर जब मुसलमानों ने क़तार आ़लम में क़दम रखा तो मुख़्तलिफ़ अक़्वामे आ़लम से उनका साबिक़ा पड़ा जिसे मुताष़्षिर होकर वो इस फ़रीज़-ए-मिल्लत को भूल गए और इंतिशार का शिकार हो गये। आज तो दौर ही दूसरा है अगरचे अब भी मुसलमानों की काफ़ी हुकूमतें दुनिया में क़ायम हैं मगर ख़िलाफ़ते राशिदा की झलक से अकष़र मह़रूम हैं। अल्लाह पाक इस पुरफ़ितन दौर में मुसलमानों को बाहमी इत्तिफ़ाक़ नस़ीब करे कि वो मुत्तह़िदा त़ौर पर जमा होकर मिल्लते इस्लामिया की ख़िदमत कर सकें। आमीन।

٣٦٧١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ: أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ: حَدَّثَنَا جَامِعُ بْنُ أَبِي رَاشِدٍ: حَدَّثَنَا أَبُو يَعْلَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْحَنَفِيَّةِ قَالَ: قُلْتُ لأَبِي: أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: أَبُوبَكْرٍ، قُلْتُ: ثُمَّ مَنْ؟ قَالَ: ثُمَّ عُمَرُ. وَ خَشِيتُ أَنْ يَقُولَ: عُثْمَانُ، قُلْتُ: ثُمَّ أَنْتَ؟ قَالَ: مَا أَنَا إِلاَّ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ.

3671. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, कहा हमसे जामेअ बिन अबी राशिद ने बयान किया, कहा हमसे अबू यअला ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ह़नीफ़ा ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद (अ़ली रज़ि.) से पूछा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल स़ह़ाबी कौन हैं? उन्होंने बतलाया कि अबूबक्र (रजि)। मैंने पूछा फिर कौन हैं? उन्होंने बतलाया कि उसके बाद उ़मर (रज़ि.) हैं। मुझे इसका अंदेशा हुआ कि अब (फिर मैंने पूछा कि उसके बाद? तो कह देंगे कि उ़ष्मान (रज़ि.)। इसलिये मैंने ख़ुद कहा, उसके बाद आप हैं? ये सुनकर बोले कि मैं तो

सिर्फ़ आम मुसलमानों की जमाअत का एक शख़्स हूँ।

तश्रीह : हज़रत अली (रज़ि.) के इस क़ौल से उन लोगों ने दलील ली है जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को आँहज़रत (ﷺ) के बाद सबसे अफ़ज़ल कहते हैं फिर उनके बाद हज़रत उमर (रज़ि.) को जैसे जुम्हूर अहले सुन्नत का क़ौल है। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मुहद्दिष़ फ़र्माते हैं कि हज़रत अली (रज़ि.) ने ख़ुद शैख़ेन को अपने ऊपर फ़ज़ीलत दी है लिहाज़ा मैं भी फ़ज़ीलत देता हूँ वरना कभी फ़ज़ीलत न देता। दूसरी रिवायत में हज़रत अली (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि जो कोई मुझको शैख़ेन के ऊपर फ़ज़ीलत दे मैं उसको मुफ़्तरी की हद लगाऊँगा। इससे उन सुन्नी हज़रात को सबक़ लेना चाहिये जो हज़रत अली (रज़ि.) की तफ़्ज़ील के क़ाइल हैं जबकि ख़ुद हज़रत अली (रज़ि.) ही उनको मुफ़्तरी क़रार दे रहे हैं।

3672. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ चले जब हम मुक़ामे बैदा या मुक़ामे ज़ातुल जैश पर पहुँचे तो मेरा एक हार टूटकर गिर गया। इसलिये हुज़ूरे अकरम (ﷺ) उसकी तलाश के लिये वहाँ ठहर गये और सहाबा भी आपके साथ ठहरे लेकिन न उस जगह पर पानी था और न उनके साथ पानी था। लोग हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आकर कहने लगे कि आप मुलाहिज़ा नहीं फ़र्माते, आइशा (रज़ि.) ने क्या किया, हुज़ूरे अकरम (ﷺ) को यहीं रोक लिया है। इतने सहाबा आपके साथ हैं, न तो यहाँ पानी है और न लोग अपने साथ लिये (पानी) हुए हैं। उसके बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अंदर आए। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त अपना सरे मुबारक मेरी रान पर रखे हुए सो रहे थे। वो कहने लगे, तुम्हारी वजह से आँहज़रत (ﷺ) को और सब लोगों को रुकना पड़ा। अब न यहाँ कहीं पानी है और न लोगों के साथ पानी है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि हजरत अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझ पर ग़ुस्सा किया और जो कुछ अल्लाह को मंज़ूर था उन्होंने कहा और अपने हाथ से मेरी कोख में कचूके लगाने लगे। मैं ज़रूर तड़प उठती मगर आँहज़रत (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर था। आँहज़रत (ﷺ) सोते रहे। जब सुबह हुई तो पानी नहीं था और उसी मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने तयम्मुम का हुक्म नाज़िल फ़र्माया और सबने तयम्मुम किया, इस पर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने कहा कि ऐ आले अबूबक्र (रज़ि.) तुम्हारी कोई पहली

٣٦٧٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيْدٍ عَنْ مَالِكٍ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: ((خَرَجْنَا مَعَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ، حَتَّى إِذَا كُنَّا بِالْبَيْدَاءِ - أَوْ بِذَاتِ الْجَيْشِ - انْقَطَعَ عِقْدٌ لِيْ. فَأَقَامَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ عَلَى الْتِمَاسِهِ، وَأَقَامَ النَّاسُ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَأَتَى النَّاسُ أَبَا بَكْرٍ فَقَالُوا: أَلاَ تَرَى مَا صَنَعَتْ عَائِشَةُ؟ أَقَامَتْ بِرَسُوْلِ اللهِ ﷺ وَبِالنَّاسِ مَعَهُ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ، وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ وَرَسُوْلُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِيْ قَدْ نَامَ، فَقَالَ: حَبَسْتِ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ، وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ وَلَيْسَ مَعَهُمْ مَاءٌ. قَالَتْ: فَعَاتَبَنِي وَقَالَ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُوْلَ، وَجَعَلَ يَطْعُنُنِي بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي فَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ عَلَى فَخِذِيْ، فَنَامَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ حَتَّى أَصْبَحَ عَلَى غَيْرِ مَاءٍ، فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ ﴿فَتَيَمَّمُوا﴾ [النساء : ٤٣]، فَقَالَ أُسَيْدُ بْنُ الْحُضَيْرِ

बरकत नहीं है। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हमने उस ऊँट को उठाया जिस पर मैं सवार थी तो हार उसी के नीचे हमें मिला। (राजेअ़ : 334)

: مَا هِيَ بِأَوَّلِ بَرَكَتِكُمْ يَا آلَ أَبِي بَكْرٍ فَقَالَتْ عَائِشَةُ : فَبَعَثْنَا الْبَعِيرَ الَّذِي كُنْتُ عَلَيْهِ فَوَجَدْنَا الْعِقْدَ تَحْتَهُ)).

[راجع: ٣٣٤]

तश्रीह : गुम होने वाला हार हज़रत अस्मा (रज़ि.) का था, इसलिये हज़रत आइशा (रज़ि.) को और भी ज़्यादा फ़िक्र हुआ, बाद में अल्लाह तआला ने उसे मिला दिया। हज़रत उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) के क़ौल का मतलब ये है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की औलाद की वजह से मुसलमानों को हमेशा फ़वाइद व बरकात मिलते रहे हैं। ये हदीष़ किताबुत तयम्मुम में भी मज़्कूर हो चुकी है। यहाँ पर उसके लाने से ये ग़र्ज़ है कि इस हदीष़ से हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के ख़ानदान की फ़ज़ीलत ष़ाबित होती है। उसैद (रज़ि.) ने कहा। **मा हिया बिअव्वलि बर्कतिकुम या आल अबीबक्र.**

3673. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, कहा मैंने ज़क्वान से सुना और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे अस्हाब को बुरा भला मत कहो। अगर कोई शख़्स उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना (अल्लाह की राह में) खर्च कर डाले तो उनके एक मुद अनाज के बराबर भी नहीं हो सकता और न उनके आधे मुद के बराबर। शुअ़बा के साथ इस हदीष़ को जरीर, अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद, अबू मुआ़विया और मुहाजिर ने भी आ'मश से रिवायत किया है।

٣٦٧٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنِ الأَعْمَشِ قَالَ : سَمِعْتُ ذَكْوَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَسُبُّوا أَصْحَابِي، فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلاَ نَصِيفَهُ)). تَابَعَهُ جَرِيرٌ وَعَبْدُ اللهِ بْنُ دَاوُدَ وَأَبُو مُعَاوِيَةَ وَمُحَاضِرٌ عَنِ الأَعْمَشِ.

तश्रीह : इससे आ़म तौर पर सहाबा किराम (रज़ि.) की फ़ज़ीलत ष़ाबित होती है ये वो बुज़ुर्गाने इस्लाम हैं । जिनको दीदारे रिसालत पनाह (ﷺ) नसीब हुआ। इसलिये उनकी अल्लाह के नज़दीक बड़ी अहमियत है। जरीर (रह.) की रिवायत को इमाम मुस्लिम ने और मुहाज़िर की रिवायत को अबुल फ़तह ने अपने फ़वाइद में और अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद की रिवायत को मुसद्दद ने और अबू मुआ़विया की रिवायत को इमाम अहमद ने वस्ल किया है। ख़िदमते इस्लाम में सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाह अ़न्हुम अज्मईन की माली क़ुर्बानियों को इसलिये फ़ज़ीलत हासिल है कि उन्होंने ऐसे वक़्त में ख़र्च किया जब सख़्त ज़रूरत थी, काफ़िरों का ग़ल्बा था और मुसलमान मुहताज थे। मक़्सूद मुहाजिरीने अव्वलीन और अंसार की फ़ज़ीलत बयान करना है। उनमें अबूबक्र (रज़ि.) भी थे, लिहाज़ा बाब की मुताबक़त हासिल हो गई। ये हदीष़ आपने उस वक़्त फ़र्माई जब ख़ालिद बिन वलीद और अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) में कुछ तकरार हुई। ख़ालिद ने अ़ब्दुर्रहमान को कुछ सख़्त कहा आपने ख़ालिद (रज़ि.) को मुख़ातब करके ये फ़र्माया। कुछ ने कहा कि ये ख़िताब उन लोगों की तरफ़ है जो सहाबा के बाद पैदा होंगे। उनको मौजूदा फ़र्ज़ करके उनकी तरफ़ ख़िताब किया। मगर ये क़ौल सहीह नहीं है क्योंकि ख़ालिद (रज़ि.) की तरफ़ ख़िताब करके आपने ये हदीष़ फ़र्माई थी और ख़ालिद (रज़ि.) ख़ुद सहाबा मे से हैं।

3674. हमसे अबुल हसन मुहम्मद बिन मिस्कीन ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन हस्सान ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे शुरैक बिन अबी नम्रह ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब ने बयान किया, कहा मुझको अबू मूसा अशअ़री

٣٦٧٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مِسْكِينٍ أَبُو الْحَسَنِ حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَسَّانَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ عَنْ شَرِيكِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ عَنْ

(रज़ि.) के कुछ हालात पूछे, जो मैंने उन्हें बता दिये तो उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) के बाद मैंने किसी शख़्स को दीन में इतनी ज़्यादा कोशिश करने वाला और इतना ज़्यादा सख़ी नहीं देखा और ये ख़साइल हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) पर ख़त्म हो गये।

شَأْنِهِ - يَعْنِي عُمَرَ - فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ : مَا رَأَيْتُ أَحَدًا قَطُّ بَعْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ حِيْنِ قُبِضَ كَانَ أَجَدَّ وَأَجْوَدَ حَتَّى انْتَهَى مِنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ)).

मुराद ये है कि अपने अहदे ख़िलाफ़त में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) बहुत बड़े दिलदार, बहुत बड़े सख़ी और इस्लाम के अज़ीम सुतून थे। मन्क़बत का जहाँ तक ता'ल्लुक़ है हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का मुक़ाम तमाम सहाबा से आला व अरफ़अ है।

3688. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक साहब (ज़ुल ख़ुवेसिर या अबू मूसा) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से क़यामत के बारे में पूछा कि क़यामत कब क़ायम होगी? इस पर आपने फ़र्माया, तुमने क़यामत के लिये तैयारी क्या की है? उन्हों ने अर्ज़ किया कुछ भी नहीं, सिवा उसके कि मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम्हारा हश्र भी उन्हीं के साथ होगा जिनसे तुम्हें मुहब्बत है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हमें कभी इतनी ख़ुशी किसी बात से भी नहीं हुई जितनी आपकी ये हदीष़ सुनकर हुई कि तुम्हारा हश्र उन्हीं के साथ होगा जिनसे तुम्हें मुहब्बत है। हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि मैं भी रसूलुल्लाह (ﷺ) से और हज़रत अबूबक्र व उमर (रज़ि.) से मुहब्बत रखता हूँ और उनसे अपनी इस मुहब्बत की वजह से उम्मीद रखता हूँ कि मेरा हश्र उन्हीं के साथ होगा, अगरचे मैं उन जैसे अमल न कर सका। (दीगर मक़ाम : 167, 6171, 7153)

٣٦٨٨- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ((أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ السَّاعَةِ فَقَالَ: مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ: ((وَمَاذَا أَعْدَدْتَ لَهَا؟)) قَالَ: لاَ شَيْءَ، إِلاَّ أَنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. فَقَالَ : ((أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ)). قَالَ: أَنَسٌ: فَمَا فَرِحْنَا بِشَيْءٍ فَرِحْنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ. قَالَ أَنَسٌ: فَأَنَا أُحِبُّ النَّبِيَّ ﷺ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ، وَأَرْجُوا أَن أَكُونَ مَعَهُمْ بِحُبِّي إِيَّاهُمْ، وَإِنْ لَمْ أَعْمَلْ بِمِثْلِ أَعْمَالِهِمْ)).

[أطرافه في : ١٦٧، ٦١٧١، ٧١٥٣].

हज़रत अनस (रज़ि.) के साथ मुतर्जिम व नाशिर की भी यही दुआ है।

3689. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे पहले उम्मतों में मुहद्दष़ हुआ करते थे, और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स है तो वो उमर हैं। ज़करिया बिन ज़ायदा ने अपनी रिवायत में सअद से ये बढ़ाया

٣٦٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيْهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيْمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ نَاسٌ مُحَدَّثُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَإِنَّهُ عُمَرُ)) زَادَ زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي

3689. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे पहले उम्मतों में मुहद्दष हुआ करते थे, और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स है तो वो उ़मर हैं। ज़करिया बिन ज़ायदा ने अपनी रिवायत में सअ़द से ये बढ़ाया

٣٦٨٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَا قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ نَاسٌ مُحَدَّثُونَ، فَإِنْ يَكُ فِي أُمَّتِي أَحَدٌ فَإِنَّهُ عُمَرُ)) زَادَ زَكَرِيَّاءُ بْنُ أَبِي

कि उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमसे पहले बनी इस्राईल की उम्मतों में कुछ लोग ऐसे हुआ करते थे कि नबी नहीं होते थे और उसके बावजूद फ़रिश्ते उनसे कलाम किया करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स हो सकता है तो वो हज़रत उ़मर हैं। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने पढ़ा, मन नबिय्यि वला मुहद्दिष। (राजेअ : 3469)

زَائِدَةَ عَنْ سَعْدٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ رِجَالٌ يُكَلَّمُونَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونُوا أَنْبِيَاءَ، فَإِنْ يَكُنْ فِي أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَعُمَرُ)). قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((مِنْ نَبِيٍّ وَلاَ مُحَدَّثٍ)). [راجع: ٣٤٦٩]

तश्रीह : मुहद्दष वो जिस पर अल्लाह की तरफ़ से इल्हाम हो और हक़ उसकी ज़ुबान पर जारी हो जाए या फ़रिश्ते इससे बात करें या वो जिसकी राय बिलकुल सहीह षाबित हो। मुहद्दष वो भी हो सकता है जो साहिबे कशफ़ हो जैसे हज़रत ईसा (रज़ि.) की उम्मत में हज़रत यूहन्ना हवारी गुज़रे हैं जिनके मकाशिफ़ात मशहूर हैं। यक़ीनन हज़रत उ़मर (रज़ि.) भी ऐसे ही लोगों में से हैं। रिवायत के आख़िर में मज़्कूर है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) सूरह हज्ज की इस आयत को यूँ पढ़ते थे, **वमा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक मिन रसूलिन व ला नबिय्यिन व ला मुहद्दसुन** अल्ख़.

कि उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमसे पहले बनी इस्राईल की उम्मतों में कुछ लोग ऐसे हुआ करते थे कि नबी नहीं होते थे और उसके बावजूद फ़रिश्ते उनसे कलाम किया करते थे और अगर मेरी उम्मत में कोई ऐसा शख़्स हो सकता है तो वो हज़रत ड़मर हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने पढ़ा, मन नबिय्यि वला मुहद्दिष़। (राजेअ : 3469)

زَائِدَةَ عَنْ سَعْدٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَقَدْ كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ رِجَالٌ يُكَلَّمُونَ مِنْ غَيْرِ أَنْ يَكُونُوا أَنْبِيَاءَ، فَإِنْ يَكُنْ فِي أُمَّتِي مِنْهُمْ أَحَدٌ فَعُمَرُ)). قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا: ((مِنْ نَبِيٍّ وَلاَ مُحَدَّثٍ)). [راجع: ٣٤٦٩]

तश्रीह : मुहद्दष़ वो जिस पर अल्लाह की तरफ़ से इल्हाम हो और हक़ उसकी ज़ुबान पर जारी हो जाए या फ़रिश्ते इससे बात करें या वो जिसकी राय बिलकुल सहीह ष़ाबित हो। मुहद्दष़ वो भी हो सकता है जो साहिबे कशफ़ हो जैसे हज़रत ईसा (रज़ि.) की उम्मत में हज़रत यूहन्ना हवारी गुज़रे हैं जिनके मकाशिफ़ात मशहूर हैं। यक़ीनन हज़रत ड़मर (रज़ि.) भी ऐसे ही लोगों में से हैं। रिवायत के आख़िर में मज़्कूर है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) सूरह हज्ज की इस आयत को यूँ पढ़ते थे, **वमा अर्सल्ना मिन क़ब्लिक मिन रसूलिन व ला नबिय्यिन व ला मुहद्दसुन** अल्ख़.

3690. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अक़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यिब और अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया कि हमने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, वो बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक चरवाहा अपनी बकरियाँ चरा रहा था कि एक भेड़िये ने उसकी एक बकरी पकड़ ली। चरवाहे ने उसका पीछा किया और बकरी को उससे छुड़ा लिया। फिर भेड़िया उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर बोला। दरिन्दों के दिन उसकी हिफ़ाज़त करने वाला कौन होगा, जब मेरे सिवा उसका कोई चरवाहा न होगा। सहाबा (रज़ि.) इस पर बोल उठे सुब्हानल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उस वाक़िये पर ईमान लाया और अबूबक्र व ड़मर (रज़ि.) भी। हालाँकि वहाँ अबूबक्र व ड़मर (रज़ि.) मौजूद नहीं थे। (राजेअ : 2324)

٣٦٩٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ قَالاَ: سَمِعْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَمَا رَاعٍ فِي غَنَمِهِ عَدَا الذِّئْبُ فَأَخَذَ مِنْهَا شَاةً، فَطَلَبَهَا حَتَّى اسْتَنْقَذَهَا، فَالْتَفَتَ إِلَيْهِ الذِّئْبُ فَقَالَ لَهُ: مَنْ لَهَا يَومَ السَّبُعِ، لَيْسَ لَهَا رَاعٍ غَيْرِي؟ فَقَالَ النَّاسُ: سُبْحَانَ اللهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: فَإِنِّي أُومِنُ بِهِ وَأَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ. وَمَا ثَمَّ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ)). [راجع: ٢٣٢٤]

ये हदीष़ ऊपर गुज़र चुकी है। उसमें गाय का भी ज़िक्र था। इससे भी हज़राते शैख़ेन की फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई।

3691. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अक़ील बिन हनीफ़ ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मैंने ख़्वाब में देखा

٣٦٩١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبُو أُمَامَةَ بْنُ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ عَنْ

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) के दामादों का बयान अबुल आ़स़ बिन रबीअ़ भी उन ही में से हैं

١٦ - بَابُ ذِكْرِ أَصْهَارِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْهُمْ أَبُو الْعَاصِ بْنُ الرَّبِيعِ

3729. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ली बिन हुसैन ने बयान किया और उनसे मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने बयान किया कि अ़ली (रज़ि.) ने अबू जहल की लड़की को (जो मुसलमान थीं) पैग़ामे निकाह़ दिया। उसकी ख़बर जब ह़ज़रत फ़ाति़मा (रज़ि.) को हुई तो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आई और अ़र्ज़ किया कि आपकी क़ौम का ख़याल है कि आपको अपनी बेटियों की ख़ाति़र (जब उन्हें कोई तकलीफ़ दे) किसी पर ग़ुस़्सा नहीं आता। अब देखिए ये अ़ली अबू जहल की बेटी से निकाह़ करना चाहते हैं। इस पर आँह़ुज़ूर (ﷺ) ने स़ह़ाबा को ख़िता़ब फ़र्माया। मैने आपको ख़ुत्बा पढ़ते सुना, फिर आपने फ़र्माया, अम्मा बअ़द! मैंने अबुल आ़स़ बिन रबीअ़ से (ज़ैनब रज़ि. की, आपकी सबसे बड़ी बेटी) शादी की तो उन्होंने जो बात भी कही उसमें वो सच्चे उतरे और बिला शुब्हा फ़ाति़मा भी मेरे

٣٧٢٩ - حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ قَالَ: ((إِنَّ عَلِيًّا خَطَبَ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ، فَسَمِعَتْ بِذَلِكَ فَاطِمَةُ، فَأَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَزْعُمُ قَوْمُكَ أَنَّكَ لاَ تَغْضَبُ لِبَنَاتِكَ، وَهَذَا عَلِيٌّ نَاكِحٌ بِنْتَ أَبِي جَهْلٍ. فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ، فَسَمِعْتُهُ حِينَ تَشَهَّدَ يَقُولُ: ((أَمَّا بَعْدُ أَنْكَحْتُ أَبَا الْعَاصِ بْنَ الرَّبِيعِ فَحَدَّثَنِي وَصَدَقَنِي، وَإِنَّ فَاطِمَةَ بَضْعَةٌ مِنِّي، وَإِنِّي أَكْرَهُ أَنْ يَسُوءَهَا. وَاللَّهِ لاَ تَجْتَمِعُ بِنْتُ

(जिस्म का) एक टुकड़ा है और मुझे ये पसन्द नहीं कि कोई भी उसे तकलीफ़ दे। अल्लाह की क़सम, रसूलुल्लाह (ﷺ) की बेटी और अल्लाह तआ़ला के एक दुश्मन की बेटी एक शख़्स के पास जमा नहीं हो सकतीं। चुनाँचे अ़ली (रज़ि.) ने उस शादी का इरादा तर्क कर दिया। मुहम्मद बिन अ़म्र बिन ह़ल्ह़ला ने इब्ने शिहाब से ये इज़ाफ़ा किया है। उन्होंने अ़ली बिन हुसैन से और उन्होंने मिस्वर (रज़ि.) से बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने बनी अ़ब्दे शम्स के अपने एक दामाद का ज़िक्र किया और ह़ुक़ूक़े दामादी की अदायगी की ता'रीफ़ फ़र्माई। फिर फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे जो बात भी कही सच्ची कही और जो वा'दा भी किया पूरा कर दिखाया।

رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَبِنْتُ عَدُوِّ اللَّهِ عِنْدَ رَجُلٍ وَاحِدٍ)). فَتَرَكَ عَلِيٌّ الْخِطْبَةَ)).
وَزَادَ مُحَمَّدُ بْنُ عَمْرِو بْنِ حَلْحَلَةَ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عَلِيِّ بْنِ مِسْوَرٍ ((سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ صِهْرًا لَهُ مِنْ بَنِي عَبْدِ شَمْسٍ فَأَثْنَى عَلَيْهِ فِي مُصَاهَرَتِهِ إِيَّاهُ فَأَحْسَنَ، قَالَ: حَدَّثَنِي فَصَدَقَنِي، وَوَعَدَنِي فَوَفَى لِي)).

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबुल आ़स़ मुक़्सम बिन अर् रबीअ़ हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) की स़ाहबज़ादी ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) उनके निकाह़ में थीं। बद्र के दिन इस्लाम क़ुबूल करके मदीना की त़रफ़ हिजरत की। आँह़ज़रत (ﷺ) से सच्ची मुह़ब्बत रखते थे। जंगे यमामा में जामे शहादत नोश फ़र्माया। उनकी फ़ज़ीलत के लिये ये काफ़ी है कि ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी वफ़ादारी की ता'रीफ़ फ़र्माई। जब ह़ज़रत अबुल आ़स़ (रज़ि.) का ये ह़ाल है तो फिर अ़ली (रज़ि.) से तअ़ज्जुब है कि वो अपना वा'दा क्यूँ पूरा न करें! हुआ गे था कि अबुल आस (रज़ि.) ने ह़ज़रत ज़ैनब (रज़ि.) से निकाह़ होते वक़्त ये शर्त़ कर ली थी कि उनके रहने तक मैं दूसरी बीवी न करूंगा। इस शर्त को अबुल आस ने पूरा किया। शायद ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने भी यही शर्त की हो लेकिन जुवैरिया को पयाम देते वक़्त वो भूल गये थे। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने इ़ताब (ग़ुस़्से) का ये ख़ुत्बा पढ़ा तो उनको अपनी शर्त़ याद आ गई और वो इस इरादे से बाज़ आए। कुछ ने कहा कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से ऐसी कोई शर्त़ नहीं हुई थी लेकिन ह़ज़रत फ़ाति़मा (रज़ि.) बड़े रंजों में गिरफ़्तार थीं। वालिदा गुज़र गईं, तीनों बहनें गुज़र गईं, अकेली बाक़ी रह गई थीं। अब सौकन आने से वो परेशान होकर अंदेशा था कि उनकी जान को नुक़्स़ान पहुँचे। इसलिये आपने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) पर इ़ताब (ग़ुस़्सा) फ़र्माया था। (वह़ीदी)

भेजूँगा जो हक़ीक़ी मा'नों में अमीन होगा। ये सुनकर तमाम सहाबा किराम (रज़ि.) को शौक़ हुआ लेकिन आप (ﷺ) ने हज़रत अबू उबैदह (रज़ि.) को भेजा।

(दीगर मक़ाम : 4380, 4381, 7354)

لأَهْلِ نَجْرَانَ: ((لأَبْعَثَنَّ - عَلَيْكُمْ، - أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ)). فَأَشْرَفَ أَصْحَابُهُ، فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ.

[أطرافه في : ٤٣٨٠، ٤٣٨١، ٧٣٥٤].

बाब 21 : हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि.) का बयान

بَابُ ذِكْرِ مُصْعَبِ بْنِ عُمَيْرٍ

तश्रीह : ये क़ुरैशी अदवी बुज़ुर्ग सहाबा में से हैं। इस्लाम से पहले बड़े बाँकपन से रहा करते थे। उम्दातरीन लिबास ज़ैब तन किया करते। इस्लाम लाने के बाद दुनिया से बेनियाज़ हो गये। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको पहले ही मुबल्लिग़ बनाकर मदीना भेज दिया था। जब वहाँ इस्लाम की इशाअत हो गई तो हुज़ूर (ﷺ) की इजाज़त से उन्होंने मदीना में जुम्आ क़ायम कर लिया। जंगे उहुद में बउम्र 40 साल शहादत पाई। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह) को अपनी शराइत के मुताबिक़ कोई हदीष इस बाब के तहत लाने को न मिली होगी। इसलिये ख़ाली बाब मुनअक़िद करके हज़रत मुसअब बिन उमैर (रज़ि.) के फ़ज़ाइल की तरफ़ इशारा कर दिया कि उनके भी फ़ज़ाइल मुसल्लम हैं जैसा कि दूसरी अहादीष मौजूद हैं।

बाब 22 : हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि.) के फ़ज़ाइल का बयान

٢٢ - بَابُ مَنَاقِبِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا

और नाफ़ेअ बिन जुबैर ने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत हसन (रज़ि.) को गले से लगाया।

قَالَ نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ((عَانَقَ النَّبِيُّ ﷺ الْحَسَنَ))

हज़रत हसन (रज़ि.) की कुन्नियत अबू मुहम्मद पैदाइश माहे रमज़ान 3 हिजरी में हुई। और वफ़ात 50 हिजरी में हुई। हज़रत हुसैन (रज़ि.) की विलादत शाबान 4 हिजरी में हुई और शहादत 61 हिजरी में हुई। उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह थी।

3746. हमसे सदक़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उययना ने बयान किया, कहा हमसे अबू मूसा ने बयान किया, उनसे हसन ने, उन्होंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) मिम्बर पर तशरीफ़ फ़र्मा थे और हज़रत हसन (रज़ि.) आप (ﷺ) के पहलू में थे। आप (ﷺ) कभी लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होते और फिर हसन (रज़ि.) की तरफ़ और फ़र्माते, मेरा ये बेटा सरदार है और उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसके ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा। (राजेअ : 2804)

٣٧٤٦- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ حَدَّثَنَا أَبُو مُوسَى عَنِ الْحَسَنِ سَمِعَ أَبَا بَكْرَةَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ وَالْحَسَنُ إِلَى جَنْبِهِ، يَنْظُرُ إِلَى النَّاسِ مَرَّةً وَإِلَيْهِ مَرَّةً وَيَقُولُ: ((ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)). [راجع: ٢٧٠٤]

तश्रीह : हज़रत हसन (रज़ि.) के बारे में पेशीनगोई हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) के ज़माने में पूरी हुई जबकि हज़रत हसन (रज़ि.) और हज़रत मुआविया (रज़ि.) की सुलह से जंग का एक बड़ा ख़तरा टल गया। अल्लाह वालों की यही निशानी होती है कि वो ख़ुद नुक़्सान बर्दाश्त कर लेते हैं मगर फ़ित्ना फ़साद नहीं चाहते।

3747. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअतमिर

٣٧٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ

ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि हमसे अबू ड़ष्मान ने बयान किया और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) उन्हें और हसन (रज़ि.) को पकड़कर ये दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह! मुझे इनसे मुहब्बत है तू भी इनसे मुहब्बत रख। अव कमा क़ाल। (राजेअ: 3735)

قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ كَانَ يَأْخُذُهُ وَالْحَسَنَ وَيَقُولُ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أُحِبُّهُمَا فَأَحِبَّهُمَا. أَوْ كَمَا قَالَ)). [راجع: ٣٧٣٥]

3748. मुझसे मुहम्मद बिन हुसैन बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा कि मुझसे हुसैन बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि जब हज़रत हुसैन (रज़ि.) का सरे मुबारक ड़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया और एक तश्त में रख दिया गया तो वो बदबख़्त उस पर लकड़ी से मारने लगा और आपके हुस्न और ख़ूबसूरती के बारे में भी कुछ कहा (कि मैंने इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत चेहरा नहीं देखा) इस पर हज़रत अनस (रज़ि.) ने कहा कि हज़रत हुसैन (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) से सबसे ज़्यादा मुशाब थे। उन्होंने वस्मा का ख़िज़ाब इस्ते'माल कर रखा था।

٣٧٤٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: حَدَّثَنِي حُسَيْنُ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: ((أُتِيَ عُبَيْدُ اللهِ بْنِ زِيَادٍ بِرَأْسِ الْحُسَيْنِ فَجُعِلَ فِي طَسْتٍ فَجَعَلَ يَنْكُتُ وَقَالَ فِي حُسْنِهِ شَيْئًا، فَقَالَ أَنَسٌ: كَانَ أَشْبَهَهُمْ بِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَكَانَ مَخْضُوبًا بِالْوَسْمَةِ)).

3749. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मुझे अदी ने ख़बर दी, कहा कि मैंने बरा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि हज़रत हसन (रज़ि.) आपके काँधे मुबारक पर थे और आप (ﷺ) ये फ़र्मा रहे थे कि ऐ अल्लाह! मुझे इससे मुहब्बत है तू भी इससे मुहब्बत रख।

٣٧٤٩- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ الْمِنْهَالِ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَدِيٌّ قَالَ: سَمِعْتُ الْبَرَاءَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ، وَالْحَسَنُ عَلَى عَاتِقِهِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ! إِنِّي أُحِبُّهُ فَأَحِبَّهُ)).

3750. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा कि मुझे ड़मर बिन सईद बिन अबी हुसैन ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे ड़क़्बा बिन हारिष़ ने बयान किया कि मैंने हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को देखा कि आप (रज़ि.) हज़रत हसन (रज़ि.) को उठाए हुए हैं और फ़र्मा रहे हैं, मेरे बाप इन पर फ़िदा हों। ये नबी करीम (ﷺ) से मुशाबेह हैं, अली से नहीं और हज़रत अली (रज़ि.) वहीं मुस्कुरा रहे थे। (राजेअ: 3542)

٣٧٥٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرُ بْنُ سَعِيدِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ قَالَ: ((رَأَيْتُ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَحَمَلَ الْحَسَنَ وَهُوَ يَقُولُ: بِأَبِي شَبِيهٌ بِالنَّبِيِّ، وَلَيْسَ شَبِيهٌ بِعَلِيٍّ. وَعَلِيٌّ يَضْحَكُ)). [راجع: ٣٥٤٢]

3751. मुझसे यह्या बिन मुईन और सदक़ा ने बयान किया,

٣٧٥١- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مَعِينٍ وَصَدَقَةُ

ज़माने तक यहाँ क़याम किया। हम उस पूरे अर्से में यही समझते रहे कि अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के घराने ही के एक फ़र्द हैं, क्योंकि हुज़ूर (ﷺ) के घर में अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) और उनकी वालिदा का (बकष़रत) आना जाना हम ख़ुद देखा करते थे। (दीगर मक़ाम : 4384)

الْيَمَنِ، فَمَكَثْنَا حِينًا مَا نَرَى إِلاَّ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ، لِمَا نَرَى مِنْ دُخُولِهِ وَدُخُولِ أُمِّهِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ)). [طرفه في: ٤٣٨٤].

बाब 28 : हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़यान (रज़ि.) का बयान

٢٨- بَابُ ذِكْرِ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ

(बड़ों की लग़्ज़िश) हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम की ख़िदमात सुनहरी हर्फ़ों से लिखने के क़ाबिल हैं मगर कोई इंसान भूल–चूक से मा'सूम नहीं है। सिर्फ़ अंबिया (अलैहिस्सलाम) की ज़ात है कि जिनकी हिफ़ाज़त अल्लाह पाक ख़ुद करता है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के ज़िक्र के सिलसिले में मौलाना मरहूम के क़लम से एक नामुनासिब बयान निकल गया है। अल्फ़ाज़ ये हैं, मुतर्जिम कहता है, सहाबियत का अदब हमको इससे मानेअ है कि हम मुआविया (रज़ि.) के बारे में कुछ कहें लेकिन सच्ची बात ये है कि उनके दिल में आँहज़रत (ﷺ) के अहले बैत की मुहब्बत न थी। मुख़्तसरन

दिलों का जानने वाला सिर्फ़ बारी तआला है। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के हक़ में मरहूम का ये लिखना मुनासिब न था। ख़ुद ही सहाबियत के अदब का ए'तिराफ़ भी है और ख़ुद ही उनके ज़मीर पर हमला भी, **इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन**। अल्लाह तआला मरहूम की लग़्ज़िश को मुआफ़ करे और हश्र के मैदान में सबको आयते करीमा **व नज़अना मा फी सुदूरिहिम मिन ग़िल्लिन** (अल आराफ़ : 43) का मिस्दाक़ बनाए आमीन। हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि.) के बेटे हैं और हज़रत अबू सुफ़यान रसूले करीम (ﷺ) के चचा होते हैं बउम्र 82 साल 60 हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया (रज़ि.) ने शहरे दमिश्क़ में वफ़ात पाई। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहु।

3764. कहा हमसे हसन बिन बशीर ने बयान किया, उनसे उष़्मान बिन अस्वद ने और उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) ने इशा के बाद वित्र की नमाज़ सिर्फ़ एक रकअत पढ़ी। वहीं हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के मौला (कुरैब) भी मौजूद थे। जब वो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो (हज़रत अमीर मुआविया रज़ि.) की एक रकअत वित्र का ज़िक्र किया) उस पर उन्होंने कहा, कोई हर्ज नहीं है। उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुहबत उठाई है। (दीगर मक़ाम : 3765)

٣٧٦٤- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ بَشِيرٍ حَدَّثَنَا الْمُعَافَى عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: ((أَوْتَرَ مُعَاوِيَةُ بَعْدَ الْعِشَاءِ بِرَكْعَةٍ وَعِنْدَهُ مَوْلًى لاِبْنِ عَبَّاسٍ، فَأَتَى ابْنَ عَبَّاسٍ، فَقَالَ: دَعْهُ فَإِنَّهُ صَحِبَ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)). [طرفه في : ٣٧٦٥].

यक़ीनन उनके पास हुज़ूर (ﷺ) के क़ौल व फ़ेअल से कोई दलील होगी।

3765. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से कहा गया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बारे में आप (रज़ि.) क्या फ़र्माते हैं। उन्होंने वित्र की नमाज़ एक रकअत पढ़ी है? उन्होंने कहा कि वो ख़ुद फ़क़ीह हैं। (राजेअ : 3764)

٣٧٦٥- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ قِيلَ لاِبْنِ عَبَّاسٍ: هَلْ لَكَ فِي أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ مُعَاوِيَةَ فَإِنَّهُ مَا أَوْتَرَ إِلاَّ بِوَاحِدَةٍ، قَالَ: ((إِنَّهُ فَقِيهٌ)). [راجع: ٣٧٦٤]

इतने में एक छोटा बन्दर आया और बन्दरिया को इशारा किया उसने आहिस्ता से अपना हाथ बन्दर के सर के नीचे से खींच लिया और छोटे बन्दर के साथ चली गई उसने उससे सुह्बत की मैं देख रहा था फिर बन्दरिया लौटी और आहिस्ता से फिर अपना हाथ पहले बन्दर के सर के नीचे डालने लगी लेकिन वो जाग गया और एक चीख़ मारी तो सब बन्दर जमा हो गये। ये उस बन्दरिया की त़रफ़ इशारा करता और चीखता जाता था। आख़िर दूसरे बन्दर इधर उधर गये और उसे छोटे बन्दर को पकड़ लाए। मैं उसे पहचानता था फिर उन्होंने उनके लिये गड्ढा खोदा और दोनों को संगसार कर डाला तो मैंने ये रजम का अ़मल जानवरों में भी देखा।

3850. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने और उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जाहिलियत की आ़दतों में से ये आ़दतें हैं नसब के मामले में त़अ़ना मारना और मय्यत पर नौहा करना, तीसरी आ़दत के बारे में (उ़बैदुल्लाह रावी) भूल गये थे और सुफ़यान ने बयान किया कि लोग कहते हैं कि वो तीसरी बात सितारों को बारिश की इल्लत समझना है।

٣٨٥٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((خِلاَلٌ مِنْ خِلاَلِ الْجَاهِلِيَّةِ: الطَّعْنُ فِي الأَنْسَابِ، وَالنِّيَاحَةُ - وَنَسِيَ الثَّالِثَةَ - قَالَ سُفْيَانُ: وَيَقُولُونَ إِنَّهَا الاِسْتِسْقَاءُ بِالأَنْوَاءِ)).

बाब 28 : नबी करीम (ﷺ) की बेअ़षत का बयान

٢٨- بَابُ مَبْعَثِ النَّبِيِّ ﷺ

आपका नाम मुबारक है मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अ़ब्दे मुनाफ़ बिन क़ुसई बिन किलाब बिन मुर्रह् बिन कअ़ब बिन लुवी बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़्र बिन किनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मदरका बिन इल्यास बिन मुज़र बिन नज़्ज़ार बिन मअ़द बिन अ़दनान।

مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ هَاشِمِ بْنِ عَبْدِ مَنَافِ بْنِ قُصَيِّ بْنِ كِلاَبِ بْنِ مُرَّةَ بْنِ كَعْبِ بْنِ لُؤَيِّ بْنِ غَالِبِ بْنِ فِهْرِ بْنِ مَالِكِ بْنِ النَّضْرِ بْنِ كِنَانَةَ بْنِ خُزَيْمَةَ بْنِ مُدْرِكَةَ بْنِ إِلْيَاسَ بْنِ مُضَرَ بْنِ نِزَارِ بْنِ مَعَدِّ بْنِ عَدْنَانَ.

यहीं तक आप (ﷺ) ने अपना नसब बयान फ़र्माया है, अ़दनान के बाद रिवायतों में इख़्तिलाफ़ है ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) ने तारीख़ में आप (ﷺ) का नसब ह़ज़रत इब्राहीम तक बयान फ़र्माया है।

3851. हमसे अहमद बिन अबी रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे नज़्र ने बयान किया, कहा उनसे हिशाम ने, उनसे इ़क्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) की चालीस साल की उ़म्र हुई तो आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हुई, उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) तेरह साल मक्का मुकर्रमा में रहे फिर आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) मदीना मुनव्वरा हिजरत करके चले गये, वहाँ दस साल रहे फिर आपने वफ़ात फ़र्माई (ﷺ) इस हिसाब से कुल उ़म्र शरीफ़ आपकी 63 साल होती है और ये सहीह़ है।

٣٨٥١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي رَجَاءٍ حَدَّثَنَا النَّضْرُ عَنْ هِشَامٍ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((أُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَهُوَ ابْنُ أَرْبَعِينَ، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ، فَهَاجَرَ إِلَى الْمَدِينَةِ، فَمَكَثَ بِهَا عَشْرَ سِنِينَ، ثُمَّ تُوُفِّيَ ﷺ)).

(राजेअ : 1245) [راجع: ١٢٤٥]

इन तमाम अह़ादीष़ में किसी न किसी त़रह़ ह़ब्शा का ज़िक्र है इसीलिये ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह) इन अह़ादीष़ को यहाँ लाए। इन तमाम अह़ादीष़ से नज्जाशी का नमाज़े जनाज़ा ग़ायबाना पढ़ा जाना भी ष़ाबित होते है अगरचे कुछ ह़ज़रात ने यहाँ मुख़्तलिफ़ तावीलें की हैं मगर उनमें कोई वज़न नहीं है स़ह़ीह़ वही है जो ज़ाहिर रिवायात के मन्कूला अल्फ़ाज़ से ष़ाबित होता है। वल्लाहु अ़ालम बिस्सवाब।

बाब 39 : नबी करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ मुश्रिकीन का अ़हद व पैमान करना

٣٩- بَابُ تَقَاسُمِ الْمُشْرِكِيْنَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ

तश्रीह : हुआ ये कि जब क़ुरैश ने देखा कि आप (ﷺ) के अस़्ह़ाब अमन की जगह या'नी मुल्के ह़ब्श पहुँच गये और इधर उ़मर (रज़ि.) ने इस्लाम क़ुबूल किया चारों त़रफ़ इस्लाम फैलने लगा तो अ़दावत व ह़सद के जोश में उन्होंने एक इक़रारनामा तैयार किया जिसका मज़्मून ये था कि बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब से निकाह़, ख़रीद व फरोख़्त कोई मामला उस वक़्त तक न करें जब तक वो आँह़ज़रत (ﷺ) को हमारे ह़वाले न कर दें। ये इक़रारनामा लिखकर का'बा के अंदर लटकाया गया। एक मुद्दत के बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने जो बनी हाशिम के साथ एक दूसरी घाटी में रहते थे और जहाँ पर बनी हाशिम और बनी मुत्तलिब को सख़्त तक्लीफ़ें हो रही थीं अबू त़ालिब अपने चचा से फ़र्माया कि उस इक़रारनामे को दीमक चाट गई स़िर्फ़ अल्लाह का नाम उसमें बाक़ी है। अबू त़ालिब ने क़ुरैश के कुफ़्फ़ारों से कहा मेरा भतीजा ये कहता है कि तुम का'बा के अंदर उस इक़रारनामे को देखो अगर उसका बयाँ सच है तो हम मरने तक कभी इसको ह़वाले नहीं करने के और अगर उसका बयान झूठ निकले तो हम इसको तुम्हारे ह़वाले कर देंगे। तुम मारो या ज़िन्दा रखो जो चाहो करो। काफ़िरों ने का'बा खोला और उस इक़रार नामे को देखा तो वाक़ई सारे हुरूफ़ को दीमक चाट गई थी स़िर्फ़ अल्लाह का नाम बाक़ी था। उस वक़्त क्या कहने लगे अबू त़ालिब तुम्हारा भतीजा जादूगर है। कहते हैं जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने अबू त़ालिब को ये क़िस्सा सुनाया तो उन्होंने पूछा तुमको कहाँ से मा'लूम हुआ। क्या तुमको अल्लाह ने ख़बर दी आपने फ़र्माया हाँ। (वह़ीदी)

7 नबवी में ये ह़ादष़ा पेश आया था तीन साल तक ये तर्के मवालात क़ायम रहा, उसके बाद अल्लाह ने अपने रसूले करीम (ﷺ) को उससे नजात बख्शी जिसकी मुख़्तस़र कैफ़ियत ऊपर मज़्कूर हुई है।

3882. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने जब जंगे हुनैन का क़स्द किया तो फ़र्माया इंशाअल्लाह कल हमारा क़याम ख़ैफ़ बनी किनाना में होगा जहाँ मुश्रिकीन ने काफ़िर रहने के लिये अ़हदो—पैमान किया था।

(राजेअ : 1579)

٣٨٨٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيْمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِيْنَ أَرَادَ حُنَيْنًا: ((مَنْزِلُنَا غَدًا - إِنْ شَاءَ اللهُ - بَنِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)). [راجع: ١٥٨٩]

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि मुश्रिकीन ने ख़ैफ़ बनी किनाना में कुफ़्र पर पुख़्तगी का अ़हद किया था जिसे अल्लाह ने बाद में टुकड़े-टुकड़े करा दिया और उनकी नस्लें इस्लाम में दाख़िल हो गईं।

बाब 40 : अबू त़ालिब का वाक़िया

٤٠- بَابُ قِصَّةِ أَبِي طَالِبٍ

ये आँहज़रत (ﷺ) के सगे चचा थे। आप (ﷺ) के वालिद माजिद अब्दुल्लाह के हक़ीक़ी भाई। ये जब तक ज़िन्दा रहे आप (ﷺ) की पूरी हिमायत और हिफ़ाज़त करते रहे मगर क़ौमी पासदारी की वजह से इस्लाम क़ुबूल करना नसीब नहीं हुआ।

3883. हमसे मुसद्दद ने बयान किया। कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे सुफ़यान स़ौरी ने, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन हारिस़ ने बयान किया, उनसे हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा आप (ﷺ) अपने चचा (अबू तालिब) के क्या काम आए कि वो आप (ﷺ) की हिमायत किया करते थे और आप (ﷺ) के लिये ग़ुस्सा होते थे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया (इसी वजह से) वो सिर्फ़ टख़नों तक जहन्नम में हैं अगर मैं उनकी सिफ़ारिश न करता तो वो दोज़ख़ की तह में बिलकुल नीचे होते। (दीगर मक़ाम : 6208, 6572)

٣٨٨٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحيى عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ الْحَارِثِ قَالَ: حَدَّثَنَا الْعَبَّاسُ بْنُ عَبدِ الْمُطَّلِبِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: مَا أَغْنَيْتَ عَنْ عَمِّكَ، فَوَ اللهِ كَانَ يَحُوطُكَ وَيَغْضَبُ لَكَ، قَالَ: ((هُوَ فِي ضَحْضَاحٍ مِنْ نَارٍ، وَلَوْ لاَ أَنَا لَكَانَ فِي الدَّرْكِ الأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ)).

[طرفاه في : ٦٢٠٨، ٦٥٧٢].

3884. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यिब ने और उन्हें उनके वालिद मुसय्यिब बिन हज़्न सहाबी (रज़ि.) ने कि जब अबू तालिब की वफ़ात का वक़्त क़रीब हुआ तो नबी करीम (ﷺ) उनके पास तशरीफ़ ले गये उस वक़्त वहाँ अबू जहल भी बैठा हुआ था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, चचा! कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह एक मर्तबा कह दीजिए, अल्लाह की बारगाह में (आपकी बख़्शिश के लिये) एक यही दलील मेरे हाथ आ जाएगी, इस पर अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या ने कहा, ऐ अबू तालिब! क्या अब्दुल मुत्तलिब के दीन से तुम फिर जाओगे! ये दोनों उन ही पर ज़ोर देते रहे और आख़िरी कलिमा जो उनकी ज़ुबान से निकला, वो ये था कि मैं अब्दुल मुत्तलिब के दीन पर क़ायम हूँ। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं उनके लिये उस वक़्त तक दुआए मग़्फ़िरत करता रहूँगा जब तक मुझे इससे मना न कर दिया जाएगा। चुनाँचे (सूरह बरात में) ये आयत नाज़िल हुई, नबी के लिये और मुसलमानों के लिये मुनासिब नहीं कि मुश्रिकीन के लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत करें ख़्वाह उनके नाते वाले ही क्यूँ न हों जबकि उनके सामने ये बात वाज़ेह हो गई कि वो दोज़ख़ी हैं, और सूरह क़सस़ में ये आयत नाज़िल हुई, बेशक जिसे आप चाहे हिदायत नहीं कर सकते।

٣٨٨٤- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ قَالَ: أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ أَبَا طَالِبٍ لَمَّا حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ دَخَلَ عَلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ- وَعِنْدَهُ أَبُو جَهْلٍ - فَقَالَ: ((أَيْ عَمِّ، قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ كَلِمَةً أُحَاجُّ لَكَ بِهَا عِنْدَ اللهِ)). فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَعَبْدُ اللهِ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ: يَا أَبَا طَالِبٍ، تَرْغَبُ عَنْ مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ؟ فَلَمْ يَزَالاَ يُكَلِّمَانِهِ حَتَّى قَالَ آخِرَ شَيْءٍ كَلَّمَهُمْ بِهِ: عَلَى مِلَّةِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ، مَا لَمْ أُنْهَ عَنْهُ)). فَنَزَلَتْ: ﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيْمِ﴾ [التوبة: ١١٣]، ونزلت: ﴿إِنَّكَ لاَ

(राजेअ़ : 1360)

تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ﴾ [القصص : ٥٦].

[راجع: ١٣٦٠]

3885. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने इल्हाद ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) की मज्लिस में आप (ﷺ) के चचा का ज़िक्र हो रहा था तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया शायद क़यामत के दिन उन्हें मेरी शफ़ाअ़त काम आ जाए और उन्हें सिर्फ़ टख़नों तक जहन्नम में रखा जाए जिससे उनका दिमाग़ खौलेगा।

٣٨٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ حَدَّثَنَا ابْنُ الْهَادِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ- وَذُكِرَ عِنْدَهُ عَمُّهُ فَقَالَ: ((لَعَلَّهُ تَنْفَعُهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُجْعَلُ فِي ضَحْضَاحٍ مِنَ النَّارِ يَبْلُغُ كَعْبَيْهِ يَغْلِي مِنْهُ دِمَاغُهُ)). حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيْمُ بْنُ

रिवायत में अबू ता़लिब का ज़िक्र है यही बाब से मुनासबत की वजह है।

हमसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबू हाज़िम और दरावर्दी ने बयान किया यज़ीद से इसी मज़्कूरा ह़दीष़ की त़रह, अल्बत्ता इस रिवायत में ये भी है कि अबू त़ालिब के दिमाग़ का भेजा उससे खौलेगा। (दीगर मक़ाम : 6564)

حَمْزَةَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِيْ حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيّ عَنْ يَزِيْدَ بِهَذَا وَقَالَ: تَغْلِي مِنْهُ أُمُّ دِمَاغِهِ.

[طرفه في : ٦٥٦٤].

बाब 41 : बैतुल मक़्दिस तक जाने का क़िस़्सा

٤١- بَابُ حَدِيْثِ الإِسْرَاءِ، وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلاً مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الأَقْصَى﴾

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया, पाक ज़ात है वो जो अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्स़ा तक ले गया।

3886. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कि मुझसे कहा अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने कि मैंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना और उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया था कि जब क़ुरैश ने (मेअ़राज के वाक़िये के सिलसिले में) मुझको झुठलाया था तो मैं ह़तीम में खड़ा हो गया और अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिये बैतुल मक़्दिस को रोशन कर दिया और मैंने उसे देखकर क़ुरैश से उसके पते और निशान बयान करना शुरू कर दिये।

(दीगर मक़ाम : 4710)

٣٨٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِالرَّحْمَنِ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَمَّا كَذَّبَنِي قُرَيْشٌ قُمْتُ فِي الْحِجْرِ تَجَلَّى اللهُ لِي بَيْتَ الْمَقْدِسِ، فَطَفِقْتُ أُخْبِرُهُمْ عَنْ آيَاتِهِ، وَأَنَا أَنْظُرُ إِلَيْهِ)).

[طرفه في : ٤٧١٠].

बाब 45 : नबी करीम (ﷺ) और आप (ﷺ) के अस्हाबे किराम का मदीना की तरफ़ हिजरत करना

٤٥- بَابُ هِجْرَةِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَصْحَابِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ

हज़रात अब्दुल्लाह बिन ज़ैद और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया कि अगर हिजरत की फ़ज़ीलत न होती तो मैं अंसार का एक आदमी बनकर रहना पसन्द करता और हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि मैंने ख़्वाब देखा कि मैं मक्का से एक ऐसी ज़मीन की तरफ़ हिजरत करके जा रहा हूँ कि जहाँ खजूर के बाग़ात बकस़रत हैं, मेरा ज़हन उससे यमामा या हजर की तरफ़ गया, लेकिन ये ज़मीन शहरे यस़्रिब की थी।

وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ وَأَبُوهُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ لاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ)). وقال أبو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ، فَذَهَبَ وَهَلِي إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرَ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ)).

3897. हमसे (अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर) हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अअ़मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू वाईल शक़ीक़ बिन सलमा से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ख़ब्बाब बिन अरम (रज़ि.) की अ़यादत के लिये गए तो उन्होंने कहा कि नबी करीम (ﷺ) के साथ हमने सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये हिजरत की थी, अल्लाह तआ़ला हमें उसका अज्र देगा। फिर हमारे बहुत से साथी इस दुनिया से उठ गये और उन्होंने (दुनिया में) अपने आमाल का फल नहीं देखा। उन्हीं में हज़रत मुस़अ़ब बिन उ़मैर (रज़ि.) उहुद की लड़ाई में शहीद किये गये थे और सिर्फ़ एक धारीदार चादर छोड़ी थी। (कफ़न देते वक़्त) जब हम उनकी चादर से उनका सर ढांकते तो पाँव खुल जाते और पाँव ढाँकते तो सर खुल जाता। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें हुक्म दिया कि उनका सर ढाँक दें और पाँव पर इज़्ख़र घास डाल दें। (ताकि छुप जाए) और हममें ऐसे भी हैं कि (इस दुनिया में भी) उनके आमाल का मेवा पक गया, पस वो उसको चुन रहे हैं।

(राजेअ़ : 1286)

٣٨٩٧- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يَقُولُ: ((عُدْنَا خَبَّابًا فَقَالَ: هَاجَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نُرِيْدُ وَجْهَ اللهِ، فَوَقَعَ أَجْرُنَا عَلَى اللهِ، فَمِنَّا مَنْ مَضَى لَمْ يَأْخُذْ مِنْ أَجْرِهِ شَيْئًا مِنْهُمْ مُصْعَبُ بْنُ عُمَيْرٍ، قُتِلَ يَوْمَ أُحُدٍ وَتَرَكَ نَمِرَةً، فَكُنَّا إِذَا غَطَّيْنَا بِهَا رَأْسَهُ بَدَتْ رِجْلاَهُ، وَإِذَا غَطَّيْنَا رِجْلَيْهِ بَدَا رَأْسُهُ، فَأَمَرَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نُغَطِّيَ رَأْسَهُ وَنَجْعَلَ عَلَى رِجْلَيْهِ شَيْئًا مِنْ إِذْخِرٍ. وَمِنَّا مَنْ أَيْنَعَتْ لَهُ ثَمَرَتُهُ فَهُوَ يَهْدِبُهَا)).

[راجع: ١٢٧٦]

मतलब ये है कि कुछ लोग तो ग़नीमत और दुनिया का माल व अस्बाब मिलने से पहले गुज़र चुके हैं और कुछ ज़िन्दा रहे, उनका मेवा ख़ूब फला फूला या'नी दीन के साथ उन्होंने इस्लामी तरक़्क़ी व कुशादगी का दौर भी देखा और वो आराम व राहत की ज़िन्दगी भी पा गये। सच है **इन्ना मअ़ल उ़स्रि युस्रा** बेशक तंगी के बाद आसानी होती है।

3898. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे

٣٨٩٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ هُوَ

अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) की तरफ़ अहद करके आता था, उस ख़तरे की वजह से कि कहीं वो फ़ित्ना में न पड़ जाए लेकिन अब अल्लाह तआला ने इस्लाम को ग़ालिब कर दिया है और आज (सर ज़मीने अरब में) इंसान जहाँ भी चाहे अपने रब की इबादत कर सकता है, अल्बत्ता जिहाद और जिहाद की निय्यत का ष़वाब बाक़ी है। (राजेअ : 3080)

إِلَى اللهِ تَعَالَى إِلَى رَسُولِهِ ﷺ مَخَافَةَ أَنْ يُفْتَنَ عَلَيْهِ، فَأَمَّا الْيَوْمَ فَقَدْ أَظْهَرَ اللهُ الإِسْلاَمَ، وَالْيَوْمَ يَعْبُدُ رَبَّهُ حَيْثُ شَاءَ، وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ)).

[راجع: ٣٠٨٠]

3901. मुझसे ज़करिया बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन नुमैर ने बयान किया, कहा कि हिशाम ने बयान किया कि उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने कि सअद बिन मुआज़ (रज़ि.) ने कहा कि ऐ अल्लाह! तू जानता है कि उससे ज़्यादा मुझे और कोई चीज़ पसन्दीदा नहीं कि तेरे रास्ते में, मैं उस क़ौम से जिहाद करूँ जिसने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया और उन्हें (उनके वतन मक्का से) निकाला, ऐ अल्लाह! लेकिन ऐसा मा'लूम होता है कि तूने हमारे और उनके बीच लड़ाई का सिलसिला ख़त्म कर दिया है। और अबान बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि (ये अल्फ़ाज़ सअद रज़ि. फ़र्माते थे) मिन क़ौमिन कज़्ज़बू नबिय्यका व अख़रजूहू मिन क़ुरैश या'नी जिन्होंने तेरे रसूल (ﷺ) को झुठलाया, बाहर निकाल दिया। इससे क़ुरैश के काफ़िर मुराद हैं।

(राजेअ : 463)

٣٩٠١- حَدَّثَنِي زَكَرِيَّا بْنُ يَحْيَى حَدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ قَالَ: هِشَامٌ: فَأَخْبَرَنِي أَبِي ((عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ سَعْدًا قَالَ: اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ أَنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ أُجَاهِدَهُمْ فِيْكَ مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا رَسُولَكَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَخْرَجُوهُ، اللَّهُمَّ فَإِنِّي أَظُنُّ أَنَّكَ قَدْ وَضَعْتَ الْحَرْبَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ)).

وَقَالَ أَبَانُ بْنُ يَزِيْدَ حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ: ((مِنْ قَوْمٍ كَذَّبُوا نَبِيَّكَ وَأَخْرَجُوهُ مِنْ قُرَيْشٍ)).

[راجع: ٤٦٣]

हज़रत सअद को ये गुमान हुआ कि जंगे अहज़ाब में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की पूरी ताक़त लग चुकी है और आख़िर में वो भाग निकले तो अब क़ुरैश में लड़ने की ताक़त नहीं रही। शायद अब हममें और उनमें जंग न हो।

3902. हमसे मतर बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को चालीस साल की उम्र में रसूल बनाया गया था। फिर आप (ﷺ) पर मक्का मुकर्रमा में तेरह साल तक वह्य आती रही उसके बाद आप (ﷺ) को हिजरत का हुक्म हुआ और आप (ﷺ) ने हिजरत की हालत में दस साल गुज़ारे, (मदीना में) जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आप (ﷺ) की उम्र 63 साल की थी।

٣٩٠٢- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا رَوْحٌ حَدَّثَنَا هِشَامٌ حَدَّثَنَا عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: ((بُعِثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لأَرْبَعِيْنَ سَنَةً، فَمَكَثَ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ سَنَةً يُوحَى إِلَيْهِ، ثُمَّ أُمِرَ بِالْهِجْرَةِ فَهَاجَرَ عَشْرَ سِنِيْنَ، وَمَاتَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّيْنَ)).

3903. मुझसे मतर बिन फ़ज़्ल ने बयान किया, कहा हमसे रौह

٣٩٠٣- حَدَّثَنِي مَطَرُ بْنُ الْفَضْلِ حَدَّثَنَا

बिन उबादा ने बयान किया, कहा हमसे ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नुबुव्वत के बाद मक्का में 13 साल क़याम किया और जब आप (ﷺ) की वफ़ात हुईतो आप (ﷺ) की उम्र 63 साल की थी।

رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ حَدَّثَنَا زَكَرِيَّاءُ بْنُ إِسْحَاقَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: ((مَكَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِمَكَّةَ ثَلاَثَ عَشْرَةَ ، وَتُوُفِّيَ وَهُوَ ابْنُ ثَلاَثٍ وَسِتِّينَ)).

3904. हमसे इस्माईल बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे मालिक ने बयान किया, उनसे उमर बिन उबैदुल्लाह के मौला अबुन् नज़्रने, उनसे उबैद या'नी इब्ने हुनैन ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर बैठे, फिर फ़र्माया अपने एक नेक बन्दे को अल्लाह तआला ने इख़्तियार दिया कि दुनिया की नेअमतों में से जो वो चाहे उसे अपने लिये पसन्द कर ले या जो अल्लाह तआला के यहाँ है (आख़िरत में) उसे पसन्द कर ले। उस बन्दे ने अल्लाह तआला के यहाँ मिलने वाली चीज़ को पसन्द कर लिया। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) रोने लगे और अर्ज़ किया हमारे माँ–बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हों। (हज़रत अबू सईद रज़ि. कहते हैं) हमें हज़रत अबूबक्र (रजि) के उस रोने पर हैरत हुई, कुछ लोगों ने कहा उन बुज़ुर्ग को देखिये, हुज़ूर (ﷺ) तो एक बन्दे के बारे में ख़बर दे रहे हैं जिसे अल्लाह तआला ने दुनिया की नेअमतों और जो अल्लाह के पास है उसमें से किसी के पसन्द करने का इख़्तियार दिया था और ये कह रहे हैं कि हमारे माँ–बाप आप हुज़ूर पर फ़िदा हों। लेकिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ही को उन दो चीज़ों में से एक का इख़्तियार दिया गया और हज़रत अबूबक्र (रजि) हममें सबसे ज़्यादा इस बात से वाक़िफ़ थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि लोगों में सबसे ज़्यादा अपनी सुहबत और माल के ज़रिये मुझ पर सिर्फ़ एक अबूबक्र (रज़ि.) हैं अगर मैंने अपनी उम्मत में से किसी को ख़लील बना सकता तो अबूबक्र को बनाता अल्बत्ता इस्लामी रिश्ते उनके साथ काफ़ी है। मस्जिद में कोई दरवाज़ा खुला हुआ बाक़ी न रखा जाए सिवाए अबूबक्र (रज़ि.) के घर की तरफ़ खुलने वाले दरवाज़े के।

(राजेअ : 466)

٣٩٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيْلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ عَنْ عُبَيْدٍ - يَعْنِي ابْنَ حُنَيْنٍ - عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ : إِنَّ عَبْدًا خَيَّرَهُ اللهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا مَا شَاءَ وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، فَاخْتَارَ مَا عِنْدَهُ. فَبَكَى أَبُو بَكْرٍ وَقَالَ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا. فَعَجِبْنَا لَهُ. وَقَالَ النَّاسُ: انْظُرُوا إِلَى هَذَا الشَّيْخِ، يُخْبِرُ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ عَبْدٍ خَيَّرَهُ اللهُ بَيْنَ أَنْ يُؤْتِيَهُ مِنْ زَهْرَةِ الدُّنْيَا وَبَيْنَ مَا عِنْدَهُ، وَهُوَ يَقُولُ: فَدَيْنَاكَ بِآبَائِنَا وَأُمَّهَاتِنَا، فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ هُوَ الْمُخَيَّرُ، وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ هُوَ أَعْلَمَنَا بِهِ. وَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ أَمَنِّ النَّاسِ عَلَيَّ فِي صُحْبَتِهِ وَمَا لِهِ أَبَابَكْرٍ، وَلَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلاً مِنْ أُمَّتِي لاَتَّخَذْتُ أَبَابَكْرٍ، إِلاَّ خُلَّةَ الإِسْلاَمِ، لاَ تَبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ خَوخَةٌ إِلاَّ خَوْخَةَ أَبِي بَكْرٍ)).

[راجع: ٤٦٦]

हुआ ये था कि मुसलमानों ने जो मस्जिदे नबवी के आसपास रहते थे अपने अपने घरों में एक एक खिड़की मस्जिद की तरफ़ खोल ली थी ताकि जल्दी से मस्जिद की तरफ़ चले जाएँ या जब चाहें आँहज़रत (ﷺ) की ज़ियारत अपने

3928. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा मुझको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) मिना में अपने ख़ैमा की त़रफ़ वापस आ रहे थे, ये उ़मर (रज़ि.) के आख़िरी ह़ज्ज का वाक़िया है तो उनकी मुझसे मुलाक़ात हो गई। उन्होंने कहा कि (उ़मर (रज़ि.) ह़ाजियों को ख़ित़ाब करने वाले थे इसलिये) मैंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! मौसमे ह़ज्ज में मा'मूली सूझ बूझ रखने वाले सब त़रह़ के लोग जमा होते हैं और शोरो—गुल बहुत होता है इसलिये मेरा ख़्याल है कि आप अपना इरादा मौक़ूफ़ कर दें और मदीना पहुँचकर (ख़ित़ाब फ़र्माएँ) क्योंकि वो हिजरत और सुन्नत का घर है और वहाँ समझदार मुअ़ज़्ज़ज़ और स़ाह़िबे अ़क़्ल लोग रहते हैं। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि तुम ठीक कहते हो, मदीना पहुँचते ही सबसे पहली फ़ुर्सत में लोगों को ख़ित़ाब करने के लिये ज़रूर खड़ा होऊँगा। (राजेअ़ : 2462)

٣٩٢٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ حَدَّثَنَا مَالِكٌ ح. وَأَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنْ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ ((أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ وَهُوَ بِمِنًى فِي آخِرِ حَجَّةٍ حَجَّهَا عُمَرُ، فَوَجَدَنِي فَقَالَ: عَبْدُ الرَّحْمَنِ. فَقُلْتُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ الْمَوْسِمَ يَجْمَعُ رَعَاعَ النَّاسِ، وَإِنِّي أَرَى أَنْ تُمْهِلَ حَتَّى تَقْدَمَ الْمَدِينَةَ، فَإِنَّهَا دَارُ الْهِجْرَةِ وَالسُّنَّةِ، وَتَخْلُصَ لأَهْلِ الْفِقْهِ وَأَشْرَافِ النَّاسِ. وَذَوِي رَأْيِهِمْ. قَالَ عُمَرُ: لأَقُومَنَّ فِي أَوَّلِ مَقَامٍ أَقُومُهُ بِالْمَدِينَةِ)). [راجع: ٢٤٦٢]

तश्रीह : इस वाक़िया का पसे मंज़र ये है कि किसी नादान ने मिना में ऐन मौसमे ह़ज्ज में ये कहा था कि अगर उ़मर मर जाएँ तो मैं फ़लाँ शख़्स से बेअ़त करूँगा। अबूबक्र (रज़ि.) से लोगों ने बिन सोचे समझे बेअ़त कर ली थी। ये बात ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) तक पहुँच गई जिस पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को गुस्सा आ गया और उस शख़्स को बुलाकर तम्बीह का ख़्याल हुआ मगर ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने ये स़लाह़ दी कि ये मौसमे ह़ज्ज है हर क़िस्म के दाना व नादान लोग यहाँ जमा हैं, यहाँ ये मुनासिब न होगा मदीना शरीफ़ पहुँचकर आप जो चाहें करें। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान का ये मश्वरा कुबूल फ़र्मा लिया।

3929. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्हें इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने कि (उनकी वालिदा उम्मे उ़लाअ रज़ि. एक अंस़ारी ख़ातून जिन्होंने नबी करीम ﷺ से बेअ़त की थी) ने उन्हें ख़बर दी कि जब अंस़ार ने मुहाजिरीन की मेज़बानी के लिये कुर्आ डाला तो उ़ष्मान बिन मज़्ऊ़न उनके घराने के ह़िस्से में आए थे। उम्मे उ़लाअ (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उ़ष्मान (रज़ि.) हमारे यहाँ बीमार पड़ गये। मैंने उनकी पूरी त़रह़ तीमारदारी

٣٩٢٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ - امْرَأَةٌ مِنْ نِسَائِهِمْ بَايَعَتِ النَّبِيَّ ﷺ - أَخْبَرَتْهُ أَنَّ عُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونٍ طَارَ لَهُمْ فِي السُّكْنَى حِينَ اقْتَرَعَتِ الأَنْصَارُ عَلَى

سُكْنَى الْمُهَاجِرِيْنَ. قَالَتْ أُمُّ الْعَلاَءِ: فَاشْتَكَى عُثْمَانُ عِنْدَنَا، فَمَرَّضْتُهُ حَتَّى تُوُفِّيَ، وَجَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ. فَدَخَلَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ، فَقُلْتُ: رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ، شَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيْكِ أَنَّ اللهَ أَكْرَمَهُ؟)) قَالَتْ: قُلْتُ: لاَ أَدْرِي، بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُوْلَ اللهِ، فَمَنْ؟ قَالَ: ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ وَاللهِ الْيَقِيْنُ، وَاللهِ إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَمَا أَدْرِي وَاللهِ - وَأَنَا رَسُوْلُ اللهِ - مَا يُفْعَلُ بِي)). قَالَتْ: فَوَاللهِ لاَ أُزَكِّي بَعْدَهُ أَحَدًا. قَالَتْ: فَأَحْزَنَنِي ذَلِكَ، فَنِمْتُ، فَرَأَيْتُ لِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُوْنٍ عَيْنًا تَجْرِي، فَجِئْتُ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ، فَقَالَ: ((ذَلِكِ عَمَلُهُ)).

[راجع: ١٢٤٣]

की लेकिन वो न बच सके। हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया था। इतने में नबी करीम (ﷺ) भी तशरीफ़ ले आए तो मैंने कहा अबू साइब! (उ़ष्मान रज़ि. की कुन्नियत) तुम पर अल्लाह की रह़मतें हों, मेरी तुम्हारे बारे में गवाही है कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें अपने इकराम से नवाज़ा है। ये सुनकर नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हें ये कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें अपने इकराम से नवाज़ा है? मैंने अ़र्ज़ किया मुझे तो इस सिलसिले में कुछ ख़बर नहीं है, मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों या रसूलल्लाह (ﷺ)! लेकिन और किसे नवाज़ेगा? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसमें तो वाक़ई कोई शक व शुब्हा नहीं कि एक यक़ीनी अम्र (मौत) उनको आ चुकी है, अल्लाह की क़सम! कि मैं भी उनके लिये अल्लाह तआ़ला से ख़ैर-ख़्वाही की उम्मीद रखता हूँ लेकिन मैं हालाँकि अल्लाह का रसूल हूँ ख़ुद अपने बारे में नहीं जान सकता कि मेरे साथ क्या मामला होगा। उम्मे अ़लाअ (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया फिर अल्लाह की क़सम! इसके बाद मैं अब किसी के बारे में उसकी पाकी नहीं करूँगी। उन्होंने बयान किया कि इस वाक़िया पर मुझे बड़ा रंज हुआ। फिर मैं सो गई तो मैंने ख़्वाब में देखा कि उ़ष्मान बिन मज़्ऊन के लिये एक बहता हुआ चश्मा है। मैं आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और आपसे अपना ख़्वाब बयान किया तो आपने फ़र्माया कि ये उनका अ़मल था। (राजेअ : 1243)

तश्रीह : एक रिवायत में यूँ है मैं ये नहीं जानता कि उ़ष्मान (रज़ि.) का ह़ाल क्या होना है। इस रिवायत पर तो कोई अंदेशा नहीं लेकिन मह़फ़ूज़ यही रिवायत है कि मैं नही जानता कि मेरा ह़ाल क्या होना है जैसे क़ुर्आन शरीफ़ में है। **व मा अदरी मा युफ़्अलु बी व ला बिकुम** (अल अह़क़ाफ़ : 9) कहते हैं ये आयत और ह़दीष़ उस ज़मान की है जब तक ये आयत नहीं उतरी थी **लियग़फ़िरहु लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिक वमा तअख़्ख़र** (अल फ़त्ह : 2) और आपको क़त्अ़न ये नहीं बतलाया गया था कि आप सब अगले पिछले लोगों से अफ़ज़ल हैं। मैं कहता हूँ कि ये तौजोह उ़म्दा नहीं। अ़स्ल ये है कि ह़क़ तआ़ला की बारगाह अजब मुस्तग़्ना बारगाह है आदमी कैसे ही दर्जे पर पहुँच जाए मगर उसके इस्तिग़्ना और किब्रियाई से बेडर नहीं हो सकता। वो एक ऐसा शहशाह है जो चाहे वो कर डाले, रत्ती बराबर उसको किसी का अंदेशा नहीं। ह़ज़रत शैख़ शर्फ़ुद्दीन यह़्या मुनीरी अपने मकातोब में फ़र्माते हैं वो ऐसा मुस्तग़्ना और बे परवाह है कि अगर चाहे तो सब पैग़म्बरों और नेक बन्दों को दम भर में दोज़ख़ी बना दे और सारे बदकार और कुफ़्फ़ार को बहिश्त मे ले जावे, कोई दम नहीं मार सकता। आख़िर ह़दीष़ में ज़िक्र है कि उनका नेक अ़मल चश्मा की सूरत में उनके लिये ज़ाहिर हुआ। दूसरी ह़दीष़ से मा'लूम होता है कि आमाले स़ालिह़ा ख़ूबसूरत आदमी की शक्ल में और बुरे अ़मल बदसूरत आदमी की शक्ल में ज़ाहिर होते हैं, दोनों ह़दीष़ बरह़क़ हैं और उनमें नेकों और बदों के मर्तबे आमाल के मुताबिक़ कैफ़ियात बयान की गई हैं जो मज़्कूरा सूरतों में सामने आती हैं। बाक़ी अ़स्ल ह़क़ीक़त आख़िरत ही में हर इंसान पर मुंकशिफ़ होगी। जो अल्लाह

फ़र्माया, इंसान का अपने बाल—बच्चों पर ख़र्च करना भी बाअ़िष़े ष़वाब है।

रिवायत में ह़ज़रत अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) का ज़िक्र है । ह़दीष़ और बाब में यही मुत़ाबक़त है।

4007. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्होंने उ़र्वा बिन ज़ुबेर से सुना कि अमीरुल मोमिनीन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रज़ि.) से उन्होंने उनके अ़हदे ख़िलाफ़त में ये ह़दीष़ बयान की कि मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) जब कूफ़ा के अमीर थे, तो उन्होंने एक दिन अ़स्र की नमाज़ में देर की। इस पर ज़ैद बिन ह़सन के नाना अबू मसऊ़द उ़क़्बा बिन अ़म्र अंसारी (रज़ि.) उनके यहाँ गये। वो बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले स़ह़ाबा में से थे और कहा, आपको मा'लूम है कि ह़ज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) (नमाज़ का त़रीक़ा बताने के लिये) आए और आपने नमाज़ पढ़ी और ह़ुज़ूर (ﷺ) ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ी, पाँचों वक़्त की नमाज़ें। फिर फ़र्माया कि इसी त़रह़ मुझे हुक्म मिला है। बशीर बिन अबी मसऊ़द भी ये ह़दीष़ अपने वालिद से बयान करते थे। (राजेअ़ : 521)

٤٠٠٧– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ : أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ يُحَدِّثُ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ فِي إِمَارَتِهِ أَخَّرَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ الْعَصْرَ وَهُوَ أَمِيرُ الْكُوفَةِ فَدَخَلَ أَبُو مَسْعُودٍ عُقْبَةُ بْنُ عَمْرٍو الأَنْصَارِيُّ جَدُّ زَيْدِ بْنِ حَسَنٍ شَهِدَ بَدْرًا فَقَالَ: لَقَدْ عَلِمْتَ نَزَلَ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ فَصَلَّى، فَصَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ خَمْسَ صَلَوَاتٍ ثُمَّ قَالَ : هَكَذَا أُمِرْتَ. كَذَلِكَ كَانَ بَشِيرُ بْنُ أَبِي مَسْعُودٍ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ. [راجع: ٥٢١]

तशरीह़ : अबू मसऊ़द (रज़ि.) की बेटी उम्मे बशर पहले सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल को मन्सूब थीं। बाद में ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) ने उनसे निकाह़ कर लिया और उनके बत़न से ह़ज़रत ज़ैद बिन ह़सन (रज़ि.) पैदा हुए। अबू मसऊ़द (रज़ि.)बद्री थे। यही बाब से वजहे मुत़ाबक़त है।

4008. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा बिन यस्आ ने और उनसे अबू मसऊ़द बद्री (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, सूरह बक़रः की दो आयतें (आमनर्रसूल से आख़िर तक) ऐसी हैं कि जो शख़्स रात में इन्हें पढ़ ले वो उसके लिये काफ़ी हो जाती हैं। अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया कि फिर मैंने अबू मसऊ़द (रज़ि.) से मुलाक़ात की, वो उस वक़्त बैतुल्लाह का त़वाफ कर रहे थे, मैंने उनसे इस ह़दीष़ के बारे में पूछा तो उन्होंने ये ह़दीष़ मुझसे बयान की।

٤٠٠٨– حَدَّثَنَا مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنِ الأَعْمَشِ عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْبَدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((الآيَتَانِ مِنْ آخِرِ سُورَةِ الْبَقَرَةِ مَنْ قَرَأَهُمَا فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ)) قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَلَقِيتُ أَبَا مَسْعُودٍ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُهُ فَحَدَّثَنِيهِ.

4009. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें मह़मूद बिन रबीअ़ ने ख़बर दी कि ह़ज़रत इ़त्बान बिन

٤٠٠٩– حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ أَنَّ عِتْبَانَ بْنَ مَالِكٍ

रसूले करीम (ﷺ) ने एक घाटी पर मुक़र्रर फ़र्माकर सख़्त ताकीद फ़र्माई थी कि हमारी जीत हो या हार हमारा हुक्म आए बग़ैर तुम उस घाटी से मत हटना, मगर उन्होंने नाफ़र्मानी की और मुसलमानों की अव्वल मरहले पर फ़तह देखकर वो अम्वाले ग़नीमत लूटने के ख़्याल से घाटी को छोड़कर मैदान में आ गये। इस नाफ़र्मानी का जो ख़ामियाज़ा सारे मुसलमानों को भुगतना पड़ा वो मा'लूम है। अल्लाह ने बतला दिया कि नाफ़र्मानी और मअ़सियत के इर्तिकाब का नतीजा ऐसा ही होता है और इन ह़िक्मतों में से एक ह़िक्मत ये भी है कि अल्लाह की त़रफ़ से मुक़र्रर है कि रसूलों को आज़माया जाता है और आख़िर अंजाम भी उन ही की फ़तह होती है जैसा कि हिरक़्ल और अबू सुफ़यान के क़िस्से में गुज़र चुका है। अगर हमेशा रसूलों के लिये मदद ही होती रहे तो मोमिनों में ग़ैर मोमिन भी दाख़िल हो सकते हैं और स़ादिक़ और काज़िब लोगों में तमीज़ उठ सकती है और अगर वो हमेशा हारते ही रहें तो बिअ़षत का मक़्सूद फ़ौत हो जाता है।

पस ह़िक्मते इलाही का तक़ाज़ा फ़तह व शिकस्त हर दौर के दरम्यान हुआ ताकि स़ादिक़ और काज़िब में फ़र्क़ होता रहे। मुनाफ़िक़ीन का निफ़ाक़ पहले मुसलमानों पर मख़्फ़ी (छुपा हुआ) था। इस इम्तिह़ान ने उनको ज़ाहिर कर दिया और उन्होंने अपने क़ौल और अ़मल से खुले त़ौर पर अपने निफ़ाक़ को ज़ाहिर कर दिया। तब मुसलमानों पर ज़ाहिर हो गया कि उनके घरों ही में उनके दुश्मन छुपे हुए हैं जिनसे परहेज़ करना लाज़िम है। आजकल भी ऐसे नामो निहाद मुसलमान मौजूद हैं जो नमाज़ व रोज़ा करते हैं मगर वक़्त आने पर इस्लाम और मुसलमानों के साथ ग़द्दारी करते रहते हैं। ऐसे लोगों से हर वक़्त चौकन्ना रहना ज़रूरी है। निफ़ाक़ बहुत ही बुरा मर्ज़ है। जिसकी मज़म्मत क़ुर्आन मजीद में कई जगह बड़े ज़ोरदार लफ़्ज़ों में हुई है और उनके लिये दोज़ख़ का सबसे नीचे वाला ह़िस्सा **वैल** सज़ा के लिये तज्वीज़ होना बतलाया है। हर मुसलमान को पाँचों वक़्त ये दुआ पढ़नी चाहिये **अल्लाहुम्म अऊ़ज़ुबिक मिनन्निफ़ाक़ि वशिशक़ाक़ि व सूइल्अख़्लाक़ि**, ऐ अल्लाह! मैं निफ़ाक़ से और आपस की फूट से और बुरे अख़्लाक़ से तेरी पनाह चाहता हूँ। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

٤٠٤١ - حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى أَخْبَرَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ حَدَّثَنَا خَالِدٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَ أُحُدٍ: ((هَذَا جِبْرِيلُ آخِذٌ بِرَأْسِ فَرَسِهِ عَلَيْهِ أَدَاةُ الْحَرْبِ)). [راجع: ٣٩٩٥]

4041. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, हमको अ़ब्दुल वह्हाब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ज़्व-ए-उहुद के मौक़े पर फ़र्माया, ये ह़ज़रत जिब्रईल (अ़लैहि.) हैं, हथियारबन्द, अपने घोड़े की लगाम थामे हुए। (राजेअ : 3995)

٤٠٤٢ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ أَخْبَرَنَا زَكَرِيَّا بْنُ عَدِيٍّ أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ حَيْوَةَ عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ: عَلَى قَتْلَى أُحُدٍ بَعْدَ ثَمَانِي سِنِينَ كَالْمُوَدِّعِ لِلأَحْيَاءِ وَالأَمْوَاتِ ثُمَّ طَلَعَ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: ((إِنِّي بَيْنَ أَيْدِيكُمْ فَرَطٌ، وَأَنَا عَلَيْكُمْ شَهِيدٌ، وَإِنَّ مَوْعِدَكُمُ الْحَوْضُ وَإِنِّي لأَنْظُرُ إِلَيْهِ مِنْ مَقَامِي هَذَا

4042. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़ीम ने बयान किया, कहा हमको ज़करिया बिन अ़दी ने ख़बर दी, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें हैवा ने, उन्हें यज़ीद बिन ह़बीब ने, उन्हें अबुल ख़ैर ने और उनसे ह़ज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने आठ साल बाद या'नी आठवीं बरस में ग़ज़्व-ए-उहुद के शुहदा पर नमाज़े जनाज़ा अदा की, जैसे आप ज़िन्दों और मुर्दों सबसे रुख़्सत हो रहे हों। उसके बाद आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया, मैं तुमसे आगे आगे हूँ, मैं तुम पर गवाह रहूँगा और मुझसे (क़यामत के दिन) तुम्हारी मुलाक़ात ह़ौज़े (कौष़र) पर होगी। इस वक़्त भी मैं अपनी इस जगह से ह़ौज़ (कौष़र) को देख रहा हूँ। तुम्हारे बारे में मुझे

وَإِنِّي لَسْتُ أَخْشَى عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا، وَلَكِنِّي أَخْشَى عَلَيْكُمُ الدُّنْيَا أَنْ تَنَافَسُوهَا)). قَالَ فَكَانَتْ آخِرَ نَظْرَةٍ نَظَرْتُهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.

[راجع: ١٣٤٤]

उसका कोई ख़तरा नहीं है कि तुम शिर्क करोगे, हाँ मैं तुम्हारे बारे में दुनिया से डरता हूँ कि तुम कहीं दुनिया के लिये आपस में मुक़ाबला न करने लगो। उक़्बा बिन आमिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) का ये आख़िरी दीदार था जो मुझको नसीब हुआ। (राजेअ़ : 1344)

तशरीह : उहुद की लड़ाई 3 हिजरी शव्वाल के महीने में हुई और 11 हिजरी माहे रबीउ़ल अव्वल में आपकी वफ़ात हो गई। इसलिये रावी का ये कहना कि आठ बरस बाद सहीह नहीं हो सकता। मतलब ये है कि आठवीं बरस जैसा कि हमने तर्जुमा में ज़ाहिर कर दिया है। ज़िन्दों का रुख़्सत करना तो ज़ाहिर है क्योंकि ये वाक़िया आपके हयाते तय्यिबा के आख़िरी साल का है और मुर्दों का विदाअ़ उसका मा'नी यूँ कर रहे हैं कि अब बदन के साथ उनकी ज़ियारत न हो सकेगी। जैसे दुनिया में हुआ करती थी। **हाफ़िज़ साहब ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) वफ़ात के बाद भी ज़िन्दा हैं लेकिन वो उख़रवी ज़िन्दगी है जो दुनियावी ज़िन्दगी से मुशाबिहत नहीं रखती।** रिवायत में हौज़े कौषर पर शर्फ़े दीदारे नबवी (ﷺ) का ज़िक्र है। वहाँ हम सब मुसलमान आपसे शर्फ़े मुलाक़ात हासिल करेंगे। मुसलमानों! कोशिश करो कि क़यामत के दिन हम अपने पैग़म्बर (ﷺ) के सामने शर्मिन्दा न हों। जहाँ तक हो सके आपके दीन की मदद करो। क़ुर्आन व हदीष़ फैलाओ। जो लोग हदीष़ शरीफ़ और हदीष़ वालों से दुश्मनी रखते हैं न मा'लूम वो हौज़े कौषर पर रसूले करीम (ﷺ) को क्या मुँह दिखाएँगे। अल्लाह तआ़ला हम सबको हौजे कौष़र पर हमारे रसूल (ﷺ) की मुलाक़ात नसीब फ़र्माए, आमीन।

٤٠٤٣ - حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ مُوسَى عَنْ إِسْرَائِيلَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لَقِينَا الْمُشْرِكِينَ يَوْمَئِذٍ وَأَجْلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشًا مِنَ الرُّمَاةِ وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ عَبْدَ اللَّهِ وَقَالَ: ((لاَ تَبْرَحُوا إِنْ رَأَيْتُمُونَا ظَهَرْنَا عَلَيْهِمْ فَلاَ تَبْرَحُوا وَإِنْ رَأَيْتُمُوهُمْ ظَهَرُوا عَلَيْنَا فَلاَ تُعِينُونَا)) فَلَمَّا لَقِينَا هَرَبُوا حَتَّى رَأَيْتُ النِّسَاءَ يَشْتَدِدْنَ فِي الْجَبَلِ رَفَعْنَ عَنْ سُوقِهِنَّ قَدْ بَدَتْ خَلاَخِلُهُنَّ فَأَخَذُوا يَقُولُونَ: الْغَنِيمَةَ الْغَنِيمَةَ، فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ جُبَيْرٍ: عَهِدَ إِلَيَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ لاَ تَبْرَحُوا فَأَبَوْا فَلَمَّا أَبَوْا صُرِفَ وُجُوهُهُمْ فَأُصِيبَ سَبْعُونَ قَتِيلاً

4043. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे इब्ने इस्हाक़ (अ़म्र बिन उ़बैदुल्लाह सबीई) ने और उनसे बरा (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे उहुद के मौक़े पर जब मुश्रिकीन से मुक़ाबला के लिये हम पहुँचे तो आँहज़रत (ﷺ) ने तीरंदाज़ों का एक दस्ता अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) की मातहती में (पहाड़ी पर) मुक़र्रर फ़र्माया था और उन्हें ये हुक्म दिया था कि तुम अपनी जगह से न हटना, उस वक़्त भी जब तुम लोग देख लो कि हम उन पर ग़ालिब आ गये हैं, फिर भी यहाँ से न हटना और उस वक़्त भी जब तुम देख लो कि वो हम पर ग़ालिब आ गये, तुम लोग हमारी मदद के लिये न आना। फिर जब हमारी मुठभेड़ कुफ़्फ़ार से हुई तो उनमें भगदड़ मच गई। मैंने देखा कि उनकी औरतें पहाड़ियों पर बड़ी तेज़ी के साथ भागी जा रही थीं, पिण्डलियों से ऊपर कपड़े उठाए हुए, जिससे उनके पाज़ेब दिखाई दे रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि.) के (तीरंदाज़) साथी कहने लगे कि ग़नीमत ग़नीमत। इस पर अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मुझे नबी करीम (ﷺ) ने ताकीद की थी कि अपनी जगह से न हटना (इसलिये तुम लोग ग़नीमत का माल लूटने न जाओ)